SACH KI DASTAK, RNI : UPHIN/2017/75716
वाराणसी से प्रकाशित

वर्ष : 6, अंक : 5, अगस्त 2022
मूल्य : 20 रु.

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

आज़ादी का अमृत महोत्सव

देश की 15वीं राष्ट्रपति बनीं
द्रौपदी मुर्मू

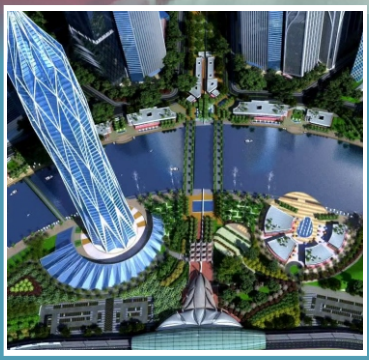

गिफ्ट सिटी परिकल्पना

क़लम इनकी जय बोल

बोथ पैरेंट्स वर्किंग सिन्ड्रोम

श्रीलंका की लंका ऐसे लगी

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने पर शुभकामनायें

आज़ादी का अमृत महोत्सव

ई. अरविंद कुमार श्रीवास्तव

सहायक अभियंता, लोक निर्माण विभाग

ज्ञानपुर

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

आर.एन.आई. UPHIN/2017/75716

वर्ष : 06, अंक : 5, अगस्त 2022

संरक्षक
इन्दू भूषण कोचगवे

संपादक
ब्रजेश कुमार

समाचार संपादक
आकांक्षा सक्सेना

खेल सम्पादक
मनोज उपाध्याय

उप सम्पादक
शिव मोहन सिंह

कानूनी सलाहकार
दिलीप कुमार सिंह (अधिवक्ता)

प्रूफ रीडर
बिपिन बिहारी उपाध्याय

प्रसार प्रभारी
अशोक सैनी

प्रसार सह प्रभारी
अजय राय
अशोक शर्मा
जितेन्द्र सिंह

ग्राफिक्स
संजय सिंह

सम्पादकीय कार्यालय
सी-6/2-एम, चेतगंज थाना के पास,
चेतगंज वाराणसी

पत्राचार (स्थानीय कार्यालय)
म.न. 1215ए, सुभाषनगर, मुगलसराय (चन्दौली)
मो.न. : 8299678756, 9598056904, 9450096479

पत्रिका में प्रकाशित समाचार / लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र चन्दौली होगा। सभी पद अवैतनिक है।

स्वामी प्रकाशक मुद्रक ब्रजेश कुमार द्वारा यादव प्रिंटर्स, ए 14/36 भारद्वाजी टोला राजघाट वाराणसी से मुद्रित।

स्टेट ब्यूरो प्रभारी

1- मृदुला श्रीमाली - उत्तर प्रदेश
2- रोहित कोचगवे - उत्तराखण्ड
3- देवेन्द्र कुमावत - राजस्थान
4- दीपाली सोढ़ी - असम
5- प्रभाकर कुमार - बिहार
6- दीपक कुमार साहा - दिल्ली
7- श्री रामकृष्ण सहस्त्रबुद्धे - महाराष्ट्र

ब्यूरो संवाददाता / रिपोर्टर

1- डॉ निशा अग्रवाल विशेष संवाददाता जयपुर (राजस्थान)
2- विकास गौण जिला प्रभारी वाराणसी (यू.पी)
3- अक्षांशु सक्सेना जिला प्रभारी औरैया (यू.पी)
4- संजय कुमार दुबे जिला प्रभारी जौनपुर (यू.पी)
5- प्रमोद शुक्ला जिला प्रभारी बाँदा (यू.पी)
6- प्रतीक राय जिला प्रभारी गाजीपुर (यू.पी)
7- विनीत कुमार रिपोर्टर पीडीडीयू (यू.पी)
8- पवन कुमार शर्मा, जिला प्रभारी देहरादून (उत्तराखंड)

सदस्यता शुल्क

1 अंक	-	रु. 20/-
वार्षिक	-	रु. 300/-(डाकखर्च सहित)

Sach Ki Dastak
A/c. No. : 13751652000024
IFSC Code : PUNB0137510
Punjab National Bank

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

इस बार

क्र.स.	लेख	पेज न.
1.	संपादकीय - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	03
2.	धरोहर - कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियों	05
3.	द्रौपदी मुर्मू बनीं देश की 15वीं राष्ट्रपति - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	06
4.	कलम इनकी जय बोल - कृष्णकांत श्रीवास्तव	08
5.	महान स्वतंत्रता सेनानी डॉ. हेडगेवारजी - पंकज जगन्नाथ जयस्वाल	13
6.	बोथ पैरेंट्स वर्किंग सिन्ड्रोम - सलिल सरोज	17
7.	चुनाव में महिला आरक्षित सीटों पर पुरुषों का वर्चस्व - भूपेंद्र	20
8.	देशभक्ति - प्रो उषा झा रेणु	22
9.	राष्ट्रध्वजा फहरायें - विजय कुमार सिन्हा 'तरुण '	23
10.	बर्ड नेचर पार्क 'एक कदम हरियाली की ओर' - पवन तिवारी	24
11.	'दिल में एक समंदर...' मनोज शाह 'मानस'	26
12.	तुमने देखा नहीं - सुमति श्रीवास्तव	27
13.	'महिला लेखिकाओं की विडम्बना' - भावना ठाकर 'भावु', बैंगलुरू	28
14.	बेनाप प्रेम - देवेन्द्र कुमावत, स्टेट ब्यूरो चीफ राजस्थान	30
15.	रक्षाबंधन पर्व की मिठास - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	31
16.	मोहल्ले की चौपाल - डॉक्टर विद्या सिंह	33
17.	मन को स्पंदित करता- 'छंद-छंद मकरंद' - अलका अग्रवाल	41
18.	श्री लंका की लंका ऐसे लगी - आकांक्षा सक्सेना, न्यूज ऐडीटर	43
19.	गिफ्ट सिटी परिकल्पना - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	48
20.	चेस ओलंपियाड से पाक खफ़ा-मनोज उपाध्याय, स्पोर्ट्स एडीटर	51
21.	मालपुआ रेसपी - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	53
22.	हिन्दू संस्कृति से ओतप्रोत फिल्म 'कार्तिकेय' - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	55

संपादकीय

स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण हो जाने की अलग ही अनुभूति हो रही है। हम सब का सौभाग्य है कि इस अमृत महोत्सव के हम सब साक्षी बने हैं। आइए! हम शपथ लें कि देश की अखंडता पर आँच नही आने देंगे।

मुझे एक बात अच्छी लगी की देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस पावन अवसर पर झंडारोहण के उपरांत देश को संबोधित करते हुए भारत के भविष्य के लिए एक कार्यक्रम सबके सामने रखा।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अगले 25 साल की यात्रा को देश के लिए 'अत्यंत महत्वपूर्ण' करार दिया और इस 'अमृत काल' में विकसित भारत, गुलामी की हर सोच से मुक्ति, विरासत पर गर्व, एकता और एकजुटता और नागरिकों द्वारा अपने कर्तव्य पालन के 'पंच प्रण' का आह्वान किया। निश्चित तौर पर या एक सराहनीय पहल है।

सभी को मालूम है कि जब सपने बड़े होते हैं... जब संकल्प बड़े होते हैं तो पुरुषार्थ भी बहुत बड़ा होता है. शक्ति भी बहुत बड़ी मात्रा में जुट जाती है।

इस आजादी के अमृत महोत्सव पर देश को 15 वें राष्ट्रपति के रूप में द्रौपदी मुर्मू मिलीं जो एक आदिवासी परिवार से आती हैं। इससे यह बात साबित होती है कि कोई भी देश का राष्ट्रपति बन सकता है। हम सब को अपने राष्ट्रपति पर गर्व होना चाहिए। इस अंक में हमने कुछ चर्चा करने का प्रयास किया है। 2007 में प्रतिभा देवी सिंह पाटिल के देश की पहली महिला राष्ट्रपति बनने का गौरव हासिल करने के बाद अब द्रौपदी मुर्मू का राष्ट्रपति बनना देश की लोकतांत्रिक परंपरा की एक सुंदर मिसाल है।

जहाँ पूरा देश अमृत महोत्सव मना रहा है, वहीं देश में स्वार्थ पूर्ण राजनीति भी होती दिखाई दे रही है। बिहार में मुख्यमंत्री की अदला बदली नही हुई बल्कि सत्तापक्ष के लिए राजनीतिक दलों की अदला बदली हुई। जो सत्ता का स्वाद चख रहे वे विपक्ष में चले गए और जो विपक्ष में थे वे सत्ता में आ गए, मुख्यमंत्री वही रहे। जो वोटर थे वे मूकदर्शक बने रहे। अजब सा राजनीति का ट्रैंड आ गया है,येन-केन प्रकारेण सत्ता पर काबिज हो जा रहे है । सोचनीय बात यह है कि चुनाव किसी के साथ लड़ते हैं और सरकार किसी के साथ बना लेते हैं। मध्य प्रदेश हो या महाराष्ट्र, सभी जगह जनता ने जिसको सरकार बनाने के लिए मत दिया राजनीतिक लोगों ने उसके विपरीत सरकार बनाकर उन्हें ही अंगूठा दिखा दिया। अब यही राजनीति है, जो किसी को समझ में न आए।

आजादी के अमृत महोत्सव की बात हो और युवाओं की बात न हो, ऐसा कैसे हो सकता है। युवा तो देश के भविष्य हैं। मौजूदा सरकारों को एक प्लान बना कर युवाओं को रोजगार देने की व्यवस्था करनी होगी तब जाकर देश में अमृत महोत्सव मनाना सफल होगा।

एक बार पुनः 'कलम इनकी जय बोल' शीर्षक के अन्तर्गत एक ऐसे स्वतंत्रता सेनानी की गाथा मिलेगी जिसने कभी हार नहीं मानी और अपनी रणनीति से अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए।

उत्तर प्रदेश के जनपद चन्दौली की एक ऐसी संस्था का जिक्र किया गया है जो वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण पर काम कर रही है, जिसका नाम 'ग्रीन हाउस क्लब' है।बीते 20 वर्षों से संस्था पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रयासरत है। संस्था के सदस्यों ने वन क्षेत्र को बर्ड नेचर पार्क के रूप में विकसित करने का बीड़ा उठाया।

हमारे पड़ोसी मुल्क श्रीलंका में जो हुआ वह किसी से छुपा नहीं है। हमने इस अंक में श्रीलंका में हुए इन घटना क्रमों का विश्लेषण करने का प्रयास किया है।

साथियों! हमें बताते हुए खुशी हो रही है कि इसी माह में पत्रिका 'सच की दस्तक 'के पांच वर्ष पूर्ण होने पर सच की दस्तक टीम अपना वार्षिक महोत्सव मना रही है। जिसके अंतर्गत साहित्यकारों का सम्मान किया जाएगा। इसके अलावा कई विभूतियों को भी 'सच की दस्तक' परिवार द्वारा सम्मानित किया जाएगा।

अंत में सभी देशवासियों को रक्षाबंधन, कृष्ण जन्माष्टमी व आजादी का अमृत महोत्सव की बधाई व हार्दिक शुभकामनाएँ।

ब्रजेश कुमार

कैफ़ी आज़मी (1919-2002)

कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों
साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई
फिर भी बढ़ते क़दम को न रुकने दिया
कट गए सर हमारे तो कुछ ग़म नहीं
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया

मरते-मरते रहा बाँकपन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

ज़िंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर
जान देने के रुत रोज़ आती नहीं
हस्न और इश्क दोनों को रुस्वा करे
वह जवानी जो खूँ में नहाती नहीं

आज धरती बनी है दुलहन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

राह कुर्बानियों की न वीरान हो
तुम सजाते ही रहना नए काफ़िले
फतह का जश्न इस जश्न के बाद है
ज़िंदगी मौत से मिल रही है गले

बांध लो अपने सर से कफ़न साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों

खींच दो अपने खूँ से ज़मी पर लकीर
इस तरफ आने पाए न रावण कोई
तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे
छू न पाए सीता का दामन कोई
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियों

अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों

कैफ़ी आज़मी
(1919-2002)

द्रोपदी मुर्मू बनीं देश की 15वीं राष्ट्रपति

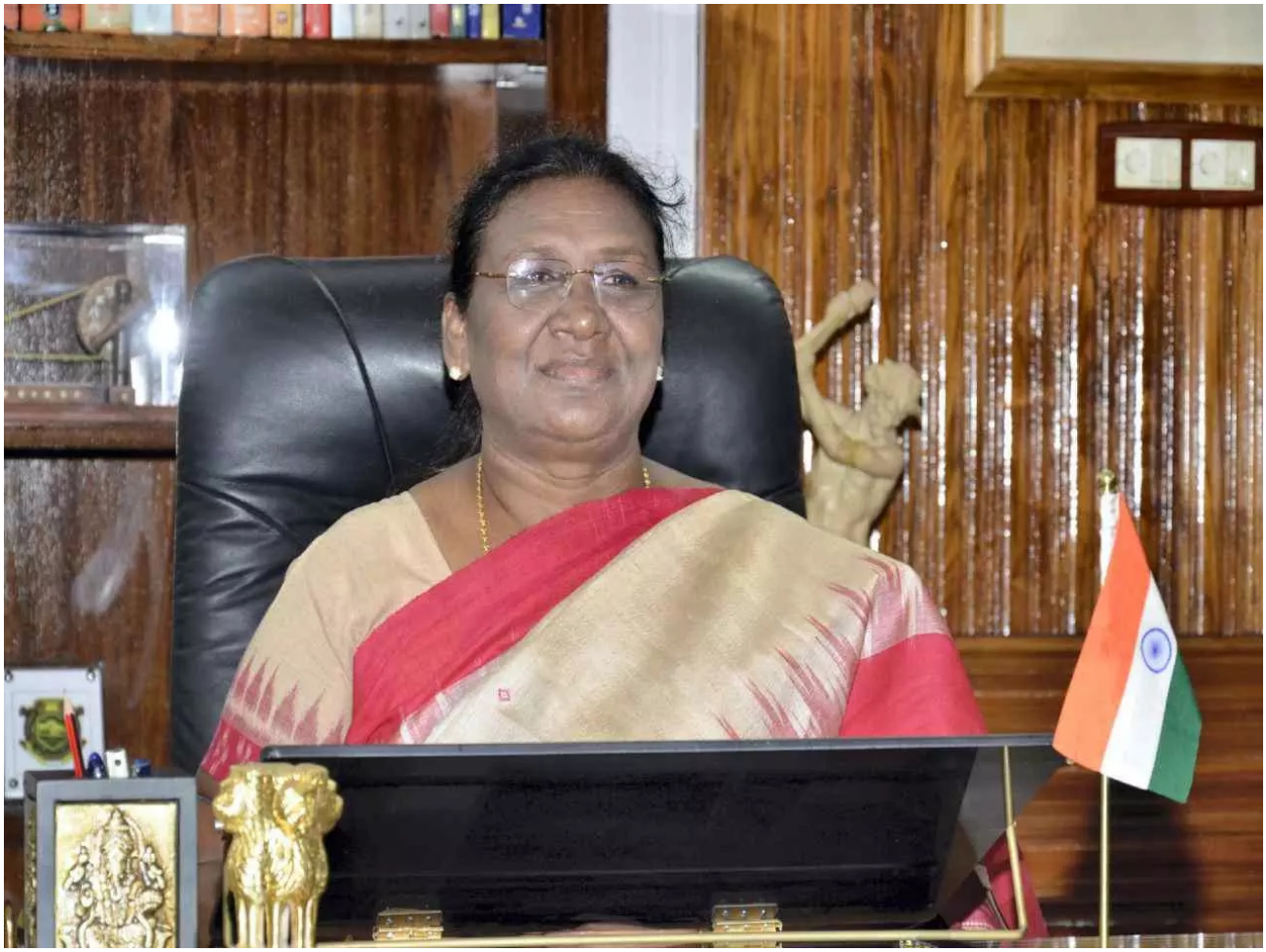

ब्रजेश कुमार
संपादक सच की दस्तक

द्रौपदी मुर्मू का जन्म, वर्ष 1958 में भारत के उड़ीसा राज्य के मयूरभंज क्षेत्र में एक आदिवासी परिवार में 20 जून को हुआ था। उनके पिता का नाम बिरंची नारायण टुडू था और द्रौपदी मुर्मू संताल आदिवासी परिवार से हैं। द्रौपदी मुर्मू झारखंड राज्य के गठन के बाद पांच साल का कार्यकाल पूरा करने वाली पहली महिला राज्यपाल हैं। उनके पति का नाम श्याम चरण मुर्मू था। आज देश की सबसे हाशिये पर खड़े समुदाय की बेटी द्रौपदी मुर्मू के प्रथम आदिवासी महिला व भारतवर्ष की 15वीं राष्ट्रपति निर्वाचित होने पर समूचा देश गौरवान्वित है। विशेषकर उनका आदिवासी समाज। सच तो यह है कि कोई सोच भी नहीं सकता था कि देश का गरीब भी कभी राष्ट्रपति पद को सुशोभित करेगा पर यह सपना सच हुआ है, क्योंकि आज मोदी युग है जिसमें सबकुछ मुमकिन है।यह सब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरगामी और सर्वसम्मानी सोच का परिचायक है और जिन्होंने भी देश की बेटी को वोट किया वो सभी सम्मानित जन इस बात का रिजल्ट

हैं कि अभी भी राजनीति इतनी कलुषित नहीं जितना की कहा और लिखा जाता रहा है। यहां यह भी कहना चाहूंगा कि आदिवासी होना बिल्कुल भी आसान बात नहीं है। यह वो कठिन, दुरुह जीवन है जिसे कभी भगवान श्री राम, माता जानकी और लक्ष्मण ने जिया। आज भी ये समाज हाशिए पर रहा, दस्तावेजों में तो उनके लिए पूर्ववर्ती सरकारों ने योजनाओं की नदियाँ बहायीं, लेकिन धरातल पर सब शून्य। जंगलों में रहना, कोई स्थाई ठौर ना ठिकाना, रोजगार-धंधों में भागीदारी शून्य तुल्य । उनकी असली पहचान गरीबी और मजबूरी ही रही। रंगभेद का भी शिकार वो हमेशा से होते रहे।कड़वा सच यही है कि आज तक इनका किसी ने भी ईमानदारी से प्रतिनिधित्व नहीं किया। ऐसा भी नहीं कि संसद या विधानसभाओं में इनके जनप्रतिनिधि ना आए हों, पर उन्होंने सिर्फ अपना भला किया। यह समुदाय जस का तस रहा। कभी-कभी आदिवासी जनप्रतिनिधियों की कोशिशों को केन्द्र का सपोर्ट न मिलने से भी, यह स्थिति रही। द्रौपदी मुर्मू के साथ भी ऐसा ही हुआ। पार्षद से लेकर विधायक, मंत्री और राज्यपाल तक रहीं लेकिन उनके मूल गांव में बिजली नहीं पहुंच पाई,हैं ना चौंकने जैसी बात। सच्चाई यही है कि इस समुदाय पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। राष्ट्रपति बनने के बाद इस समुदाय को मुर्मू से बहुत उम्मीदें हैं। पर उम्मीदों को पंख लगेगें या नहीं। ये तो वक्त ही बताएगा, लेकिन उनकी जीत पर समूचा आदिवासी समाज दिल से खुश जरूर है। साथ ही अभी से खुद को विकास की मुख्यधारा से जुड़ा देख पा रहा है। द्रौपदी मुर्मू उनकी आखिरी उम्मीद हैं और मुझे विश्वास है कि वह अपने इस समुदाय के साथ-साथ पूरे देश के लिए शुभ और मंगल सिद्ध होगीं। द्रौपदी मुर्मू को लेकर लोगों में चर्चा आम है कि आदिवासी वोटरों को लुभाने के लिए भाजपा यह सब कर रही है। क्योंकि पहले रामनाथ कोविन्द जब राष्ट्रपति बने तो दलितों को लगा कि कोई बड़ा चमत्कार होगा । भेदभाव जातिवाद में कुछ बदलाव आयेगा पर समाज वैसा का वैसा ही रहा। क्योंकि राष्ट्रपति किसी को वैचारिक तौर पर बदल दें यह तो बड़े जतन का काम है जोकि राष्ट्रपति की जिम्मेदारी में कहीं गुम हो गया। अब दलित ट्वीटर पर खुलकर लिखते हैं कि बहुसंख्यक वोट के लिए यह किया गया और राजनीति वोट मोहरा तक घोषित कर दिया। वही विपक्ष ने राष्ट्रपति जी को रबर स्टाम्प तक कह डाला। लोगों को चिंता है कि द्रौपदी मुर्मू के साथ भी ऐसा ना हो? क्योंकि राजस्थान जैसे प्रदेशों में चुनाव होने हैं, जहां आदिवासियों की संख्या बहुत ज्यादा है। क्या उन्हें साधने के लिए ही तो ये सब नहीं किया गया। ऐसी आशंकाएं लोगों के मन में हैं। इसके अलावा छत्तीसगढ़ और ओडिशा प्रदेश हैं जो उनका मूल राज्य भी है वहां आदिवासियों की संख्या मजबूत है। ओडिशा भाजपा के आगामी एजेंडे में है जहां दशकों से नवीन पटनायक सत्ता संभाले हुए हैं। उन्हें हटाने के लिए कई पार्टियों ने अपने जनाधार को बढ़ाने का प्रयास किया, लेकिन पटनायक की लोकप्रियता के सामने किसी की नहीं चली। भाजपा अब उनके किले को द्रोपदी मुर्मू को लाकर, ध्वस्त करना चाहती है। लोगों का काम है कहना और विपक्ष का काम ही है सरकार के कार्यों की समीक्षा करना बाकि जनता का रूख चुनाव में साफ और साबित हो ही जायेगा। खैर, सच यह है कि समय सबका बदलता है। एक विकट परिस्थितियों से घिरी वह महिला, जो ये मानती हैं कि जीवन कठिनाइयों के बीच ही रहेगा, हमें ही आगे बढ़ना होगा। कोई ढ़केलकर कभी हमें आगे नहीं बढ़ा पाएगा',मेहनत हमें ही करनी होगी। वही महिला अब भारत की राष्ट्रपति बनी हैं। हम कह सकते हैं कि आज 'राष्ट्रपति भवन' अब वास्तविकता में 'कनक भवन' बन गया है तथा देश की प्रत्येक बहन-बेटी का आत्मविश्वास लाख गुना बढ़ गया है कि हाँ मैं भी राष्ट्रपति बन सकती हूँ। आज हर बेटी की जुबां पर द्रोपदी मुर्मू का नाम है जोकि देश के सुखद भविष्य के लिए महत्वपूर्ण होगा। कुछ ही दिनों बाद कितना सुन्दर नज़ारा होगा जब नवनिर्वाचित हमारी राष्ट्रपति श्री मती द्रोपदी मुर्मू का 15 अगस्त की पूर्व संध्या पर उनका राष्ट्र के लिए सम्बोधन सुना तथा 75वें अमृत महोत्सव की बेला में हम सब 76वें अमृत काल का अनुभव कर रहें है। इसी के साथ आप सभी को सच की दस्तक परिवार की तरफ़ से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ।

■■

कलम इनकी जय बोल

तात्या टोपे

आजादी के अमृत महोत्सव में कलमकारी की भागीदारी भी आत्मीय राष्ट्रधर्मिता है। जनपद चंदौली (वाराणसी) के वरिष्ठ नागरिक, रंगकर्मी तथा चर्चित पुस्तक 'कलम चलती रहे' के लेखक ने पिछले एक साल से प्रत्येक अंत में क्रांतिवीरो के ऊपर अपनी कलम चलाई है। इस इल्मे-अदब में अब तक मुंशी प्रेमचंद, मालवीय जी, रानी लक्ष्मीबाई, बाल गंगाधर तिलक, आजाद, भगत सिंह, नेताजी सुभाष, राम प्रसाद बिस्मिल को गौरवान्वित किया गया है।

प्रस्तुत अंक में पढ़िए प्रथम स्वाधीनता संग्राम के प्रमुख सेनानायक तात्या टोपे की

वीर गाथा।

(संपादक)

कृष्णकान्त श्रीवास्तव
वरिष्ठ रंगकर्मी - रचनाकर्मी

स्वतंत्रता संग्राम में वीर शहीदों पर अपनी काव्य शब्दिता से सुभद्रा कुमारी चौहान ने निम्न पंक्तियों में अपने हिय का प्यार व्यक्त किया है-

'अपने बिखरे भावों का मैं
गूंथ अटपटा सा यह हार
चली चढ़ाने उन चरणों पर
अपने हिय का संचित प्यार।'

अब्राहम लिंकन ने लिखा है-

'सफल होने के लिए आपका अपना संकल्प किसी और से ज्यादा महत्वपूर्ण होता है।'

जैनेंद्र कुमार ने भी कहा है-

'क्रांति जहां भी हुई है, पहले मन से हुई है। प्रेम की चरम सीमा वहां है जहां व्यक्ति तन्यम हो जाता है।

यही तन्यमता उन क्रांतिकारियों की तासीर बन गई जिनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य था गुलामी की जंजीरों से मां भारती को मुक्त कराना।

इससे पहले की बलिदानी तात्या टोपे पर कुछ लिखूं आइए जिस तिरंगे ने आजादी के बाद राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधा है उस राष्ट्रीय ध्वज के निर्माता आंध्र प्रदेश के महान स्वतंत्रता सेनानी पिंगली वेंकैया को उनकी 146वीं जयंती पर नमन और 'हर घर तिरंगा' का संकल्प।

जीवन वृत्त-

जन्म- 16 फरवरी 1814, देशस्थ कुलकर्णी (ब्राह्मण) परिवार में।

जन्म स्थान- नासिक के पास येवला नामक छोटा गाँव,पाटौदा जिला,महाराष्ट्र।

पिता का नाम- पाण्डुरंग त्र्यम्बक भट्ट जो पेशवा बाजीराव द्वितीय के धर्मदाय विभाग के प्रमुख थे। ये पेशवा के काफी खास लोगों में से एक थे।

माता का नाम- रुकमणी बाई।

तात्या का वास्तविक नाम रामचंद्र पांडुरंग येवलकर था, परंतु लोग स्नेह से उन्हें तात्या के नाम से बुलाते थे। आठ भाई-बहनों में ये सबसे बड़े थे। ये आजीवन अविवाहित रहे।

भारत में अपना साम्राज्य फैलाने के लिए अंग्रेजों ने कई राजाओं से उनके राज्य छीन लिए थे। सन् 1818 पेशवा बाजीराव द्वितीय से भी उनका राज्य छीन लिया गया और वार्षिक आठ लाख रुपये पेंशन देकर उन्हें कानपुर के पास बिठूर गांव भेज दिया गया। महज चार साल के तात्या को लेकर उनके पिता पाण्डुरंग भी पूरे परिवार के साथ बिठूर आ गए।

बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नानासाहेब के साथ तात्या के काफी अच्छे संबंध थे। दोनों ने मिलकर एक साथ शिक्षा और युद्ध-प्रशिक्षण प्राप्त किया।

तात्या टोपे नाम कैसे पड़ा-

तात्या के साथ 'टोपे' शब्द कैसे जुड़ा इस पर कई किस्से मिलते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि तात्या ने कुछ समय के लिए ब्रिटिश सेना के तोपखाने में नौकरी

की थी। इसी कारण उनके नाम के साथ 'टोपे' शब्द जुड़ा। कुछ लोगों का कहना है कि बाजीराव ने तात्या को अपने यहां मुंशी का पद दिया था। इस पद को तात्या ने बखूबी संभाला। तात्या की विद्वत्ता और कर्तव्य परायणता को देखकर बाजीराव ने अपने राजसभा में बहुमूल्य नवरत्न से जड़ी हुई टोपी देकर उनका सम्मान किया था। तात्या इस टोपी को बड़े गर्व से पहनते थे। इस टोपी को पहनने के कारण लोग उन्हें तात्या टोपी या तात्या टोपे के नाम से बुलाने लगे और उनका उपनाम 'टोपे' पड़ गया। उन्हें रामचंद्र पाण्डुरंग की जगह 'तात्या टोपे' कहा जाने लगा।

तात्या टोपे और 1857 का विद्रोह-

ब्रिटिश हुकूमत के द्वारा हर वर्ष बाजीराव पेशवा को आठ लाख रुपये पेंशन दिए जाते थे, लेकिन उनकी मृत्यु के बाद यह पेंशन बंद कर दिया गया और उनके दत्तक पुत्र नानासाहेब को उनका उत्तराधिकारी मानने से साफ इंकार कर दिया गया। अंग्रेजों के इस निर्णय से नानासाहेब और तात्या तोपे बहुत नाराज हुए और उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ रणनीति बनानी शुरू कर दी।

10 मई 1857 को मेरठ से ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ विद्रोह की चिंगारी फूटी जो पूरे उत्तर भारत में फैल गई। ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ विद्रोह की लपटें जब कानपुर में पहुंची तो नानासाहेब और तात्या टोपे भी इस स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। नाना साहेब ने तात्या टोपे को अपनी सेना की जिम्मेदारी दी और उन्हें सेना का सलाहकार नियुक्त कर दिया।

अंग्रेजी सेना ने ब्रिगेडियर जनरल हैवलॉक के नेतृत्व में कानपुर पर हमला किया तब तात्या ने कानपुर की सुरक्षा के लिए कड़ा संघर्ष किया, परंतु 16 जुलाई 1857 को वे पराजित हो गए और कानपुर छोड़ना पड़ा। नानासाहेब अपने परिवार के साथ नेपाल चले गए और वहीं पर उन्होंने अंतिम सांस ली।

अंग्रेजो के खिलाफ युद्ध में पराजय मिलने के बाद भी तात्या टोपे ने हार नहीं मानी। अपनी सेना का पुनर्गठन कर वे पुनः कानपुर से 12 मील दूर बिठूर पहुंच

गए और कानपुर पर आक्रमण करने का मौका खोजने लगे। पर हैवलॉक ने अचानक ही बिठूर पर हमला कर दिया। बिठूर की लड़ाई में तात्या टोपे पुनः पराजित हुए लेकिन उनके नेतृत्व में भारतीय सैनिकों ने इतनी बहादुरी के साथ अंग्रेजों का मुकाबला किया कि अंग्रेज सेनापति को भी उनकी प्रशंसा करनी पड़ी।

तात्या टोपे में कुशल सैन्य नेतृत्व के सभी गुण थे, इसीलिए इस पराजय से वे विचलित नहीं हुए और बिठूर से रावसाहेब सिंधिया के पास ग्वालियर चले गए। उन्होंने 'ग्वालियर कंटिजेंट' नाम की प्रसिद्ध सैनिक टुकड़ी को अपनी ओर मिलाया और फिर एक बड़ी सेना के साथ कालपी होते हुए नवंबर 1857 को कानपुर पर आक्रमण कर दिया। कानपुर की सुरक्षा में तैनात ब्रिटिश सेना भाग गई। परंतु कुछ समय के पश्चात ही ब्रिटिश सेना के प्रधान सेनापति सर कॉलिंन कैंपबेल ने तात्या को पुनः पराजित कर दिया। तात्या अब खारी गए और वहां के नगर पर कब्जा किया। खारी में उन्हें कई तोपें और तीन लाख रुपये प्राप्त हुए।

तात्या टोपे और रानी लक्ष्मीबाई-

अंग्रेजों ने अपनी 'राज्य हड़प नीति' के तहत जिस तरह नानासाहेब को उत्तराधिकारी मानने से इनकार कर दिया था, वैसे ही अंग्रेजों ने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के दत्तक पुत्र को भी उत्तराधिकारी नहीं माना। झांसी पर कब्जा करने के लिए मार्च 1857 को सर ह्यूरोज ने झांसी पर हमला कर दिया। तात्या टोपे और लक्ष्मीबाई पहले से ही एक दूसरे को जानते थे और मित्र थे। ऐसे नाजुक समय में तात्या टोपे ने लक्ष्मीबाई की मदद करने का फैसला लिया और अपने बीस हजार सैनिकों के साथ झांसी पहुँचे। तात्या और लक्ष्मीबाई ने मिलकर ब्रिटिश सेना पर विजय प्राप्त की। आगे की रणनीति बनाने के लिए दोनों कालपी आ गए। ब्रिटिश सेना को और जोरदार शिकस्त देने के लिए तात्या टोपे ने एक नई योजना बनाई। कालपी की सुरक्षा का भार लक्ष्मीबाई पर छोड़कर भेष बदलकर वे ग्वालियर चले गए। उन्होंने महाराज जयाजी राव सिंधिया की सेना को अपनी और मिलाया और ग्वालियर के किले पर कब्जा कर लिया। जीत का डंका बजाते हुए तात्या टोपे, रावसाहेब और लक्ष्मीबाई ने ग्वालियर के किले में प्रवेश किया और नाना साहेब को पेशवा घोषित किया गया। इस सफलता ने स्वतंत्रता संग्राम में एक नया जोश भर दिया और ब्रिटिश हुकूमत को जोरदार धक्का लगा।

इससे पहले कि तात्या टोपे अपनी सैन्य शक्ति को और अधिक संगठित करते ह्यूरोज ने आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में ग्वालियर के पास कोटा की सराय में रानी लक्ष्मी बाई 18 जून,1858 को वीरगति को प्राप्त हो गई।

तात्या टोपे का संघर्ष-

लक्ष्मी बाई की शहादत ने तात्या के जोश को नासूर सा जख्म दिया। फिर भी आगामी दस महीने तात्या टोपे के अद्वितीय शौर्य गाथा से भरे हुए हैं। अधिकांश स्थानों पर ब्रिटिश साम्राज्य ने 1857 के विद्रोह को कुचल दिया था लेकिन अत्यंत योग्य सेनापतित्व का परिचय देते हुए तात्या टोपे अंग्रेजों के हाथ नहीं लगे थे और अपने मुट्ठी भर सिपाहियों के साथ समय-समय पर अपना ठिकाना बदल-बदल कर ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिलाने की कोशिश करते रहे।

ब्रिटिश सेना के खिलाफ तात्या टोपे ने अब एक जबरदस्त छापेमारी युद्ध (गुरिल्ला युद्ध पद्धति) का संचालन किया, जिसने उन्हें विश्व के छापेमार योद्धाओं की पहली पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया। इस छापेमारी युद्ध के दौरान तात्या टोपे ने दुर्गम पहाड़ियों, घाटियों, बरसात से उफनती नदियों और घने जंगलों को पार कर मध्य प्रदेश और राजस्थान में ऐसी दौड़ लगाई जिससे अंग्रेजी सेना में तहलका मच गया। ब्रिटिश सेना ने उन्हें बार-बार घेरने की कोशिश की परंतु एक कुशल छापामार योद्धा अपनी विलक्षण सूझ-बूझ से हमेशा अंग्रेजों के घेरे और उनके जाल से निकलता गया। घने जंगलों में तात्या टोपे द्वारा अंग्रेज सैनिकों के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध करने की अनेक

दंत कथाएं प्रचलित हैं।

तत्कालीन अंग्रेज लेखक 'सिल्वेस्टर' ने लिखा है कि- 'हजारों बार तात्या टोपे का पीछा किया गया और चालीस-चालीस मील तक एक ही दिन में घोड़ों को दौड़ाया गया परंतु तात्या को पकड़ने में कभी सफलता नहीं मिली।

तात्या को भरोसा था कि यदि नर्मदा नदी पार करके महाराष्ट्र पहुंचना संभव हो जाए तो स्वतंत्रता संग्राम को न केवल जारी रखा जा सकेगा बल्कि अंग्रेजों को भारत भूमि से खदेड़ा भी जा सकेगा। उल्लेखनीय है कि अक्टूबर 1858 के अंत में करीब 2500 सैनिकों के साथ तात्या ने नर्मदा नदी पार की थी।

कर्नल मालेसन ने लिखा है कि तात्या टोपे चंबल, नर्मदा और पार्वती की घाटियों के निवासियों के हीरो बन गए थे। सच तो यह है कि तात्या सारे भारत के हीरो बन गए थे।

तात्या टोपे को फांसी की कहानी-

अंग्रेजो के खिलाफ भारतीय जनता में आजादी की अलख जगाने के लिए तात्या टोपे ने उत्तर भारत से लेकर नर्मदा पार दक्षिण भारत तक महायात्रा की।

जब तात्या पाड़ौन के जंगल में विश्राम कर रहे थे, उनके साथ विश्वासघात हुआ और 7 अप्रैल,1859 को ब्रिटिश सेना ने उन्हें सोते हुए पकड़ लिया।

ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ विद्रोह करने और युद्ध लड़ने के आरोप में 15 अप्रैल 1859 को शिवपुरी में तात्या पर कोर्ट मार्शल किया गया। कोर्ट मार्शल के सभी सदस्य अंग्रेज थे। सजा मिली- 'मौत की सजा'। उन्हें शिवपुरी के किले में तीन दिन कैद रखा गया।

18 अप्रैल को शाम चार बजे हजारों लोगों की उपस्थिति में खुले मैदान में तात्या फांसी के तख्त पर चढ़े और स्वयं फांसी के फंदे को अपने गले में डाल लिया।

राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस के नव्वे अधिवेशन में कुछ ऐतिहासिक सामग्री प्रकाश में आई है जिसके अनुसार एक योजना के तहत तात्या टोपे के स्वामीभक्त साथी को नकली तात्या टोपे बनने के लिए राजी किया गया। इस देश भक्त ने तात्या टोपे को बचाने के लिए अपना बलिदान देना स्वीकार किया। इसी नकली तात्या को असली समझ कर अंग्रेजों ने पकड़ कर फांसी दे दी। असली तात्या टोपे इसके बाद भी आठ-दस वर्ष तक जीवित रहे। तात्या टोपे के भतीजे प्रोफ़ेसर टोपे तथा उनकी वृद्धा भतीजी के अनुसार तात्या टोपे को फांसी नहीं हुई थी। उनका कहना है कि सन् 1909 में तात्या टोपे का स्वर्गवास हुआ और उनके परिवार ने विधिवत अंतिम संस्कार किया था।

सन 1926 में लंदन में एटवड थॉम्पसन की पुस्तक 'दी अदर साइड ऑफ द मेडिल' में भी तात्या टोपे की फांसी पर शंका प्रकट की गई है।

यह अंत नहीं आरंभ है-

टी. एस. एलियट ने लिखा है- 'मेरी शुरुआत में मेरा अंत निहित है' और मेरी अंतर्मुखी यात्रा कहती है कि यह वीर काल का अंत नहीं एक और आरंभ है। शहीदों ने यही गाया होगा

..... 'अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों'-- स्वतंत्रता के संग्राम में 'रिले

रेस' की भांति।

उनकी अमर आत्मा एक नए आरंभ का अभियान चाहती है-- 'हर हाथ में हो तरंगा झंडा'। आजादी के अमृत महोत्सव से जन्म लेने वाला है 25 वर्षों के बाद एक 'स्वर्णिम महोत्सव' (अर्थात आजादी का सौ साल)।

हमें, आज सर्वप्रथम यह चिंतन-मनन करना होगा कि हम अपनी आने वाली पीढ़ी को एक भ्रष्टाचार मुक्त-सुरक्षा- संरक्षा- शिक्षा- सुविधा के साथ, राजनीतिक दल दल से परे, हर कुटुंब के कल्याण के लिए एक स्वर्णिम वृक्ष दे पाएंगे....?

'मुझे चूमो, और फूल बना दो
मुझे चूमो, और फल बना दो
मुझे चूमो, और बीज बना दो
मुझे चूमो, और वृक्ष बना दो
फिर मेरी छाँह में,
मातृभूमि की गोद में
बैठ रोम-रोम जुड़ाओ'
ताकि रूप के संपर्क से अलंकार बन

सके।

स्मरण रहे मनुष्य ने जब से अपने अस्तित्व का सपना देखा, उस आदिम काल से लेकर आज तक मनुष्य ने जितने भी सपने देखे हैं उन सब सपनों को यदि पृथ्वी के किसी एक स्थान पर आश्रय मिला है तो वह है भारत भूमि।

कवि गोपाल प्रसाद व्यास की इस काव्यात्मक आत्मीय अभिव्यक्ति से अमृत महोत्सव के महफिल में तात्या टोपे की बलवती बलिदान को करता हूं सलाम--

सुख पाया तो इतना जाना,
दुख पाया तो कुम्हला जाना,
यह भी क्या कोई जीवन है;
पैदा होना, फिर मर जाना।
मरना हो तो फिर ऐसे मर
ज्यों भगत सिंह कुर्बान हुआ,
पैदा हो तो फिर ऐसा हो,
जैसे तात्या बलवान हुआ।

सेन्ट जोसेफ पब्लिक स्कुल

भगवानपुर रानेपुर चहनियां चंदौली

श्री अनिल जोसेफ

डायरेक्टर व प्रिंसिपल

महान स्वतंत्रता सेनानी डॉ. हेडगेवारजी

(स्वतंत्रता संग्राम में 'आरएसएस' की बड़ी भूमिका)

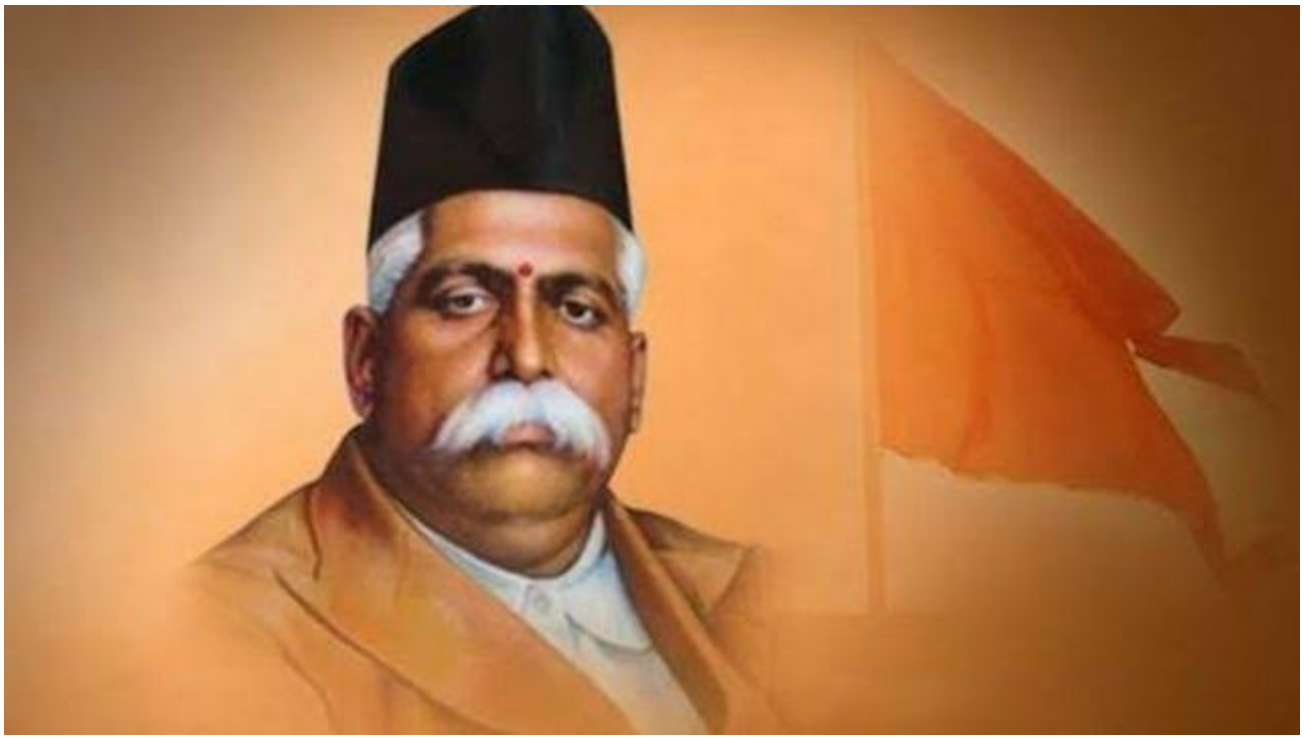

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

अधिकांश लोगों का मानना है कि पूज्य डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी ने बस मातृभूमि की पूजा की और भारत की सुरक्षा और सम्मान के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित करने के लिए एक प्रसिद्ध संगठन की स्थापना की। उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक और कुशल आयोजक के रूप में जाना जाता था, लेकिन वे एक महान क्रांतिकारी, स्वतंत्रता सेनानी, उत्साही वक्ता और महान विचारक भी थे। इसकी जानकारी कुछ ही लोगों को है।

जो लोग सवाल उठाते हैं कि स्वतंत्रता संग्राम में 'आरएसएस' ने क्या भूमिका निभाई, उन्हें डॉ हेडगेवार जी, उनके संघर्ष, उनके कठोर कारावास और उन्होंने लोगों को ब्रिटिश शासन से लड़ने के लिए कैसे प्रेरित किया, के बारे में जानना चाहिए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के संस्थापक डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार का जन्म नागपुर में एक अप्रैल 1889 को हुआ था। पेशे से डॉक्टर हेडगेवार बचपन से ही देशभक्ति के विचारों से ओतप्रोत थे। आरएसएस के स्वयंसेवक नाना पालकर ने हेडगेवार की जीवनी में उनके बचपन की ऐसी कुछ घटनाओं का जिक्र किया है जिनसे प्रारंभित विचारों का पता चलता है। आइए हम आपको ऐसी ही दो घटनाओं के बारे में

बताते हैं।केशव अपने तीन भाइयों में सबसे छोटे थे। उनके पिता बलिराम पंत हेडगेवार चाहते थे कि उनके छोटे बेटे को आधुनिक शिक्षा मिले। पालकर लिखते हैं, 'केशव को अंग्रेजी विद्यालय में भेजने का निश्चय हुआ। उन्हें महाल के पास ही नीलसिटी हाई स्कूल में भर्ती करा दिया गया।' लेकिन अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने के बावजूद बालक केशव के मन में देश प्रेम के विचार आकार पाते रहे और बहुत जल्द ही बालक केशव की देशभक्ति की परीक्षा का वक्त आ गया। '22 जून, 1897 को इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया के राज्यारोहण के साठ वर्ष पूरे होते थे। विदेशी सरकार ने यह अवसर फिर से एक बार अपने विजेतापन का डंका विजितों के मन में बजाने के लिए उपयुक्त समझा। राज्योहण के दिन सरकारी आज्ञा से समूचे देश के गांव-गांव में उत्सव मनाये गये। प्रत्येक विद्यालय में राजनिष्ठा प्रकट करनेवाले समारोहों का आयोजन हुआ। झण्डे, पताका, हार, तुर्रे, वाद्य, इत्र, तथा स्वाभिमानशून्य भाषणों के साथ ही बच्चों को मिठाई बाँटने का कार्यक्रम भी इन समारोहों में रखा गया था।'

जाहिर है ये मिठाई भारत की गुलामी का प्रतीक थी। बालक केशव को ये बात बहुत खल रही थी इसलिए मिठाई के पुड़े को उसने कूड़े के डब्बे में फेंक दिया। पालकर लिखते हैं, 'ष्ठजब पास-पड़ोस के बच्चे मिठाई के पुड़े घरवालों को दिखाकर आनंद मना रहे थे उस समय 'केशव गम्भीर क्यों हैं' यह प्रश्न उसके भाई के मन में आया। ''लगता है कि तुम्हें मिठाई नहीं मिली, केशव!'', उन्होंने पूछा। ''मिली तो'', केशव ने उत्तर दिया, ''परन्तु अपने भोंसलों के राज्य को जीतनेवाले राजा के समारोह का आनन्द कैसा?''ऐसा नहीं है कि केशव ने वो मिठाई बचपने में फेंक दी थी। कुछ ही साल बाद एक बार ऐसा ही मौका आया और उस समय भी उनका बरताव वही रहा। साल 1901 ईसवी में ब्रिटिश बादशाह एडवर्ड सप्तम के राज्यारोहण के पर स्थानीय मिल के मालिकों ने आतिशबाजी जलाकर ब्रिटिश हुकूमत के प्रति अपनी निष्ठा जाहिर करने का फैसला लिया। इस आलीशान आतिशबाजी को देखने के लिए बालक केशव के कई मित्र निकल पड़े। लेकिन जब मित्रों ने केशव से साथ चलने को कहा तो उन्होंने उत्तर दिया, ''विदेशी राजा का राज्यारोहण उत्सव मनाना हमारे लिए लज्जा का विषय है। अतः मैं नहीं चलूँगा।''

1925 में आरएसएस के गठन के बाद, न केवल संघ के स्वयंसेवकों बल्कि कई राष्ट्रवादियों को भी उनके भाषणों और जमीनी कार्यों से प्रेरित किया गया था। यह जानने के लिए पढ़ें कि कैसे उन्होंने इतनी बाधाओं के बावजुद ब्रिटिश शासन से लड़ने के लिए लाखों लोगों को प्रेरित किया। मई 1921 में, कटोट और भरतवाड़ा में डॉ. हेडगेवार के आक्रामक भाषणों के जवाब में, उन्हें ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार द्वारा राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। सुनवाई 14 जून, 1921 को अदालत में शुरू हुई, जिसमें स्मेमी नाम के एक ब्रिटिश न्यायाधीश ने कार्यवाही देखी। कुछ दिनों की सुनवाई के बाद, डॉ हेडगेवार ने इस अवसर का उपयोग राष्ट्रीय जागरण के लिए करने का फैसला किया और अपनी पैरवी खुद करने का फैसला किया। वहीं, 5 अगस्त, 1921 को उन्होंने अपना लिखित बयान पढ़ा, जिसमें उन्होंने कहा, 'मुझ पर आरोप है कि मेरे भाषणों ने भारतीयों के मन में यूरोपीय लोगों के खिलाफ असंतोष, घृणा और देशद्रोह की भावना पैदा की है।' मैं इसे अपने महान देश का अपमान मानता हूं कि एक विदेशी सरकार यहां एक स्थानीय नागरिक से सवाल कर रही है और उसे जज कर रही है। मैं नहीं मानता कि आज भारत में एक वैध सरकार है। अगर ऐसी सरकार मौजूद है तो यह आश्चर्यजनक है अगर यह दावा किया जा रहा है तो। आज जो भी सरकार मौजूद है, वह एक भारतीयो से छीनी हुई शक्ति है, जिससे एक दमनकारी शासन अपनी शक्ति प्राप्त करता है। आज के कानून और अदालतें इस अनधिकृत व्यवस्था की कृत्रिम कृतियां हैं। जनता की चुनी हुई सरकारे है जो दुनिया के ज्यादातर देशो में लोगों के लिए बनी है, और वह सरकारे सही कानूनों की शासक है। सरकार के अन्य सभी रूप केवल धोखाधड़ी हैं जिन्हें शोषकों ने छीन लिया है-शोषकों ने असहाय देशों को लूटने के लिए उनपर नियंत्रण लिया है। मैंने जो करने की कोशिश की वह मेरे देशवासियों के दिलों में रहने के लिए पर्याप्त था। मैं अपनी मातृभूमि के प्रति श्रद्धा की भावना जगा सकता हूं। मैं लोगों को समझाने की कोशिश कर रहा हूं कि भारत देश का अस्तित्व कायम है। यह भारत के लोगों के लिए अभिप्रेत है।

अगर कोई भारतीय अपने देश के

लिए राष्ट्रवाद फैलाना चाहता है और देशवासियों को अपने देश के बारे में बेहतर महसूस कराने के इरादे से कुछ बोलता है, उसे देशद्रोही नहीं माना जाना चाहिए और जो लोग राष्ट्रवाद फैलाते हैं, भारत की ब्रिटिश सरकार उन्हें देशद्रोही मानती है, तो मैं कहना चाहता हूँ कि वह दिन दूर नहीं है जब सभी विदेशियों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर किया जायेगा।मेरी भाषा की सरकार की व्याख्या न तो सटीक है और न ही व्यापक।

मेरे खिलाफ कुछ भ्रामक शब्द और बेतुके वाक्य लगाए गए हैं, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यूनाइटेड किंगडम और यूरोप के लोगों के साथ व्यवहार करते समय, दोनों देशों के बीच संबंधों को नियंत्रित करने वाले सिद्धांतों को ध्यान में रखा जाता है। मैंने जो कुछ भी कहा, मैंने इस विचार को पुष्ट करने के लिए कहा कि यह देश भारतीयों का है और हमें अपनी स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। मैं अपने हर शब्द के लिए पूरी जिम्मेदारी स्वीकार करता हूं। हालांकि मैं अपने ऊपर लगे आरोपों पर आगे कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता, लेकिन मैं अपने भाषणों में कहे गए हर शब्द का बचाव करने के लिए तैयार हूं और यह घोषणा करता हूं कि मैंने जो कुछ भी कहा वह सही था। उनके बयान को सुनकर न्यायाधीश ने कहा, 'उनका अपना बचाव बयान उनके मूल बयान से ज्यादा राष्ट्रविरोधी है।' यह कथन पढ़ते ही न्यायालय द्वेष और घृणा से भर गया। डॉ. हेडगेवारजी ने एक संक्षिप्त भाषण के साथ इस कथन का अनुसरण किया। उन्होने कहा, 'भारत भारतीयों के लिए है।' इसलिए हम आजादी की मांग कर रहे हैं, जो मेरे सभी भाषणों का सार कहता है। लोगों को बताया जाना चाहिए कि आजादी कैसे और कब हासिल करनी है। अगर हमें यह मिल जाए तो हमें भविष्य में कैसे कार्य करना चाहिए? अन्यथा, यह पूरी तरह से संभव है कि स्वतंत्र भारत में लोग अंग्रेजों की नकल करने लगेंगे। हालाँकि अंग्रेज दूसरे देशों पर दमनकारी तरीकों से हमला करते हैं और शासन करते हैं, लेकिन जब अपने देश की स्वतंत्रता की बात आती है, तो वे खून बहाने को तैयार रहते हैं। यह हाल के युद्ध द्वारा प्रदर्शित किया गया है । इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम अपने लोगों, प्यारे देशवासियों से कहें कि अंग्रेजों की गुस्से वाली हरकतों की नकल न करें। बिना किसी दुसरे देश की जमीन वगैरह हथियाने के बजाय अपनी आजादी शांति से प्राप्त करो। बस अपने देश में ही सन्तुष्ट रहो। 'मैं इस विमर्श को बनाने के लिए वर्तमान राजनीतिक मुद्दों को उठाना बंद नहीं करूंगा।' यह सभी के लिए स्पष्ट है कि अंग्रेज हमारे प्यारे देश पर अपना दमनकारी शासन थोप रहे हैं। वह कौन सा कानून है जो कहता है कि एक देश को दूसरे पर शासन करने का अधिकार है? मेरे पास आपके लिए एक सरल और सीधा सवाल है, सरकारी वकील। क्या आप कृपया जवाब दे सकते हैं? क्या यह प्राकृतिक न्याय का उल्लंघन नहीं है? यदि किसी देश को दूसरे पर शासन करने का अधिकार नहीं है, तो अंग्रेजों को भारत पर शासन करने का अधिकार किसने दिया? और हमारे लोगों को कुचल दो? और खुद को इस देश का मालिक घोषित करते हैं? क्या यह उचित है? क्या यह नैतिकता की सर्वाधिक चर्चित हत्या नहीं है?

हमें ब्रिटेन पर अधिकार करने और उस पर शासन करने की कोई इच्छा नहीं है। जैसे ब्रिटेन और जर्मनी में ब्रिटिश लोग स्वयं शासन करते हैं, वैसे ही हम भारतीय स्वशासन का अधिकार और अपना काम करने की स्वतंत्रता चाहते हैं। हमारा दिमाग ब्रिटिश साम्राज्य की गुलामी के विचार के खिलाफ विद्रोह करता है, और इस बात को जोड़ता है कि हम इसे सहन नहीं कर सकते। हम 'पूर्ण स्वतंत्रता' से कम कुछ भी स्वीकार नहीं करेंगे। अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो हमें शांति नहीं मिलेगी। मैं कानूनी नैतिकता में विश्वास करता हूं और कानूनों को तोड़ा नहीं जाना चाहिए। मैं मानता हूं कि कानून टूटने के लिए नहीं है, बल्कि बनाए रखने के लिए है। यही कानून का प्राथमिक लक्ष्य होना चाहिए।' डॉ. हेडगेवार द्वारा कोर्ट को देशभक्ति का पत्र लिखे जाने के बाद कोर्ट ने अगस्त में अपना फैसला सुनाया. अदालत ने उन्हे यह वचन देने का आदेश दिया कि वह अगले एक साल तक देशद्रोही भाषा का प्रयोग नहीं करेंगे और 3000 रुपये की जमानत राशि जमा करनी होगी । डॉ. हेडगेवार की प्रतिक्रिया थी, 'मेरी आत्मा कहती है कि मैं पूरी तरह से निर्दोष हूं।' मुझे और मेरे साथी भारतीयों को दबाना सरकार की कुनीतियों के कारण पहले से ही जल रही आग में पेट्रोल डालने के समान है। मुझे विश्वास है कि वह दिन आएगा जब विदेशी शासन अपनी

गलतियों के लिए भुगतान करेगा। मुझे सर्वशक्तिमान ईश्वर के न्याय पर पूर्ण विश्वास है। नतीजतन, मैं स्पष्ट रूप से कहता हूं कि मैं आदेशों का पालन नहीं करूंगा।' जैसे ही उन्होंने अपना उत्तर समाप्त किया, न्यायाधीश ने उन्हें एक वर्ष कठोर कारावास की सजा सुनाई। डॉ. हेडगेवारजी अदालत कक्ष से निकले, जहां भारी भीड़ जमा थी।

उन्होने उन्हें संबोधित किया और कहा, 'जैसा कि आप जानते हैं, मैंने व्यक्तिगत रूप से देशद्रोह के इस मामले में अपना बचाव किया है।' हालांकि, लोग अब भ्रमित हैं कि पक्ष में बहस करना भी राष्ट्रीय आंदोलन के खिलाफ धोखाधड़ी का कार्य है; हालांकि, मैं मानता हूं कि जब किसी व्यक्ति पर झूठा मुकदमा चलाया जाता है तो वह खुद को मरने के लिए छोड़ देना मूर्खता होगी। विदेशी शासकों के पापों को पूरी दुनिया के ध्यान में लाना हमारी जिम्मेदारी है। इसे देशभक्ति के रूप में संदर्भित किया जाएगा, लेकिन अपनी रक्षा करने में विफल रहना कुछ मायनों में आत्महत्या करने के बराबर होगा। आप चाहें तो खुद उनकी रक्षा कर सकते हैं, लेकिन भगवान के लिए जो आपसे असहमत हैं, वे कम देशभक्त हैं ऐसा विश्वास मत करो। यदि हमें अपने देशभक्ति के कर्तव्य के पालन में जेल जाने के लिए कहा जाता है, या यदि हमें दंडित किया जाता है और अंदमान भेजा जाता है, या फांसी पर लटकाने की सजा दी जाती है, तो हमें अपनी इच्छा से ऐसा करने के लिए तैयार रहना चाहिए, लेकिन किसी को भी इस धारणा के तहत नहीं सोचना चाहिए कि जेल जाना ही सब कुछ है, और यही स्वतंत्रता प्राप्त करने का एकमात्र तरीका है। वास्तव में, हमारे पास जेल के बाहर अपने देश की सेवा करने के और भी कई अवसर हैं। मैं एक साल में आपके पास वापस आऊंगा। मुझे यकीन है कि मैं तब तक आप सभी के संपर्क में नहीं रहूंगा, लेकिन मुझे यकीन है कि 'पूर्ण स्वतंत्रता' आंदोलन को गति मिली होगी। भारत के विदेशी उपनिवेशवादियों के लिए अब देश मे ज्यादा समय रहना संभव नहीं है। मैं आप सभी को धन्यवाद देना चाहता हूं और अलविदा कहना चाहता हूं।' जेल से लौटने के बाद, अपने स्वागत समारोह के दौरान, डॉ हेडगेवार ने कहा, 'यह तथ्य कि मैं एक 'अतिथि' के रूप में एक वर्ष के लिए सरकारी जेल में कठोर शिक्षा भुगत कर आ रहा हूं, मेरी योग्यता में कोई नई बात नहीं है, और अगर यह वास्तव में मेरी योग्यता में वृद्धि दर्शाता है, अगर ऐसा है तो सरकार को श्रेय लेना चाहिए। आज हम अपने देश की दृष्टि में सर्वोच्च स्थान रखते हैं और सबसे शानदार विचार रखते हैं। कोई भी विचार जो पूर्ण स्वतंत्रता से कम है वह हमें पूर्ण सफलता नही देगा। आपको यह बताने के लिए कि हम अपने लक्ष्य को कैसे प्राप्त करना चाहते हैं, आपकी बुद्धि का अपमान होगा, अगर हम इतिहास के पाठों से नहीं सीखते हैं। भले ही मृत्यु हमारे रास्ते में हो, हमें अपनी यात्रा जारी रखनी चाहिए। भ्रमित मत हो; हमें अपने मन में परम लक्ष्य का दीप जलाते रहना चाहिए और अपनी शांतिपूर्ण यात्रा पर चलते रहना चाहिए।' उनका विचार था राष्ट्रसेवा सर्वोपरि, हिन्दू समाज को जाग्रत और संगठित करना, आगामी 100 सालों अर्थात 2025 तक भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने का लक्ष्य तय किया था।) देश की एकता और प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए सामाजिक एकता होना बहुत जरूरी है। इसी कड़ी में सामाजिक समरसता बनाये रखने के लिए वर्तमान संघ प्रमुख मोहन भागवत ने मुस्लिम मंच की स्थापना कर संघ की नयी शाखा बना डाली। जिसे कई लोगों का आरएसएस के प्रति नजरिया बदला।

अंततः, 1925 में आरएसएस की स्थापना करने वाले केशव बलिराम हेडगेवार ने 1940 में नागपुर में जीवन की अंतिम सांस ली थी।

(स्रोतः अरुण आनंद, पांच सरसंघचालक पुस्तक)

वैसे, संघ अपने काम के बड़े पैमाने पर प्रचार में विश्वास नहीं करता है, इसलिए स्वतंत्रता संग्राम के दौरान और स्वतंत्रता के बाद संघ के अनेकों राष्ट्रहित - लोकहित से जुड़े कार्य देश में कई लोगों के लिए अज्ञात हैं।

बोथ पैरेंट्स वर्किंग सिन्ड्रोम (बी पी डब्ल्यू एस)

सलिल सरोज
कार्यकारी अधिकारी, लोक सभा सचिवालय, संसद भवन, नई दिल्ली

समाज में जब भी परिवर्त्तन की स्थिति बनती है तो उस प्रक्रिया में सबसे ज्यादा वो प्रभावित होते हैं जो लोग अपनी अधिकांश जरूरतों के लिए किसी और पर निर्भर होते हैं जैसे कि स्त्रियाँ, बच्चे और बुजुर्ग। घर, कार्य स्थल, समाज और देश में परिवार के इन तीन सदस्यों को अपनी सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक और भावनात्मक आवश्यकताओं के लिए किसी न किसी रूप में अनन्योश्रित होना पड़ता है। स्त्रियाँ घर में अपनी जगह तो कभी अपनी महत्ता बनाए रखने के लिए अपने पति, अपने सास-ससुर और कभी-कभी अपने बच्चों तक पर निर्भर रहती हैं। कार्य स्थल पर अपनी वाज़िब प्रोन्नति के लिए भी अपने बॉस तो कभी सहकर्मियों का सहारा लेती हुई देखी जा सकती हैं। समाज में अपनी हैसियत और पहचान के लिए समाज के धार्मिक और राजनीतिक ढाँचों में इन्हें अपनी 'आइडेंटिटी' तलाश करनी पड़ती है। और अपने ही देश में अपने अधिकारों और हक़ के लिए क़ानून और कानून के तराजू के दोनों पलड़ों के बीच पेंडुलम की भाँति इन्हें झूलना भी पड़ता है। बच्चों के परिपेक्ष्य में अगर बात की जाए तो बच्चे घर में माँ-बाप, दादा-दादी या घर की हेल्पर्स, स्कूल के लिए स्कूल वैन वाले पर, शिक्षकों पर,

समाज में ऊँच-नीच, जाति-पाति,अमीरी-गरीबी आदि मापदंडों पर एवं देश में अपना स्थान जानने के लिए दमघोंटू परीक्षाओं और उन में हासिल हुए अंकों पर निर्भर रहना होता है। और यही स्थिति कमोबेश बुजुर्गों की भी है।

भारत का मिडिल क्लास कई बोझ ले कर जीता है। अपने से अगले वर्ग की तरफ बढ़ने की जद्दोजहद और स्वयं से नीचे वर्ग से खुद को बेहतर समझने के भंवर में यह वर्ग हमेशा किसी न किसी उलझन का शिकार नज़र आता है। बाजारवाद, स्त्रीवाद, दैहिक स्वतंत्रता, आर्थिक उन्नयन, बेरोक-टोक ज़िंदगी जीने की चाहत और नई पीढ़ी के द्वारा परिवार और शादी की संस्था को मिलने वाली चुनौतियों ने मिडिल क्लास को और भी भ्रमित किया है। दिल्ली जैसे मेट्रो शहरों में एक सम्मानित ज़िंदगी जीने के लिए अब विवाह योग्य जोड़ों के लिए नौकरी में होना पहली प्राथमिकता बन गई है क्योंकि महँगाई, बच्चों की अच्छी शिक्षा, बुजुर्गों की दवा और अपनी इच्छाओं की कीमत दो व्यक्तियों की कमाई के समक्ष बौनी नज़र आती है। पति-पत्नी की कमाई में से एक की कमाई कभी होम लोन, कभी कार लोन, कभी एजुकेशन लोन तो कभी कोई और लोन चुकाने में चली जाती है। जिस हिसाब से महँगाई बढ़ती है उस हिसाब से आमदनी नहीं बढ़ती लेकिन जरूरतें और इच्छाएँ हर गणितीय समीकरण को तोड़ कर आगे बढ़ जाती हैं और उत्पन्न कर जाती हैं एक असमंजस की स्थिति। और इस स्थिति को मेरे शब्दों में कहा जाए तो यही कहा जाएगा - बोथ पैरेंट्स वर्किंग सिन्ड्रोम (बी पी डब्ल्यू एस)।

बोथ पैरेंट्स वर्किंग सिन्ड्रोम (बी पी डब्ल्यू एस) प्रायः मिडिल क्लास परिवार में देखने को मिलता है जहाँ 8 बजे सुबह माँ-बाप ऑफिस के लिए, बच्चे स्कूल के लिए, बुजुर्ग किसी क्लब, पुस्तकालय या पार्क के लिए निकल जाते हैं। बच्चे फिर दिन भर के लिए किसी दाई या घर में दादा-दादी हुए तो उनके सहारे पलने-बढ़ने लगते हैं लेकिन जिनकी जरूरत सबसे ज्यादा होती है वो ही कहीं देखे नहीं जाते हैं। इस तरह के माहौल में पले बच्चों के लिए माँ-बाप का आस पास नहीं होना एक 'न्यू नार्मल' बन जाता है और घर पर जब माँ-बाप होते हैं तो उस वक़्त को काटने के लिए वो फिर फोन, वीडियो गेम या किसी अन्य हॉबी का सहारा लेना शुरू कर देते हैं। बच्चे इस क्रम में एकाकीपन को एक सामान्य प्रक्रिया के रूप में देखने लगते हैं और भीड़ या दोस्तों की टोली में खुद को जोड़ नहीं पाते और आगे चल कर यह भीड़ जो कभी प्रतिस्पर्धा बन जाती है, कभी सामाजिक प्राणी की जरूरत बन जाती है तो कभी सबसे बड़ी हक़ीक़त बन जाती है तो बच्चों में हीन भावना घर करने लगती है। शरू में सबको यह सामान्य लगता है लेकिन जब बच्चा हर बात पर माँ-बाप से अपनी बात ना कहकर छिपाने लगे, झूठ बोलने लगे, किसी गलत आदत या संगति का शिकार होने लगे तो बात चिंताजनक प्रतीत होने लगती है। माँ-बाप के होते हुए बिना माँ-बाप के सप्ताह के 5 से 6 दिन लगातार 12 से 15 घंटे किसी और के साथ काटना ही बच्चों को माँ-बाप से अलग करने लगती है। काम के बोझ के कारण माँ-बाप दोनों के लिए पारिवारिक और सामजिक जिम्मेदारियों को निभाना कठिन होने लगता है। आपस में तनाव बढ़ने लगते हैं और स्थिति अलग होने तक आ पहुँचती है और इन सब में इनके आक्रोश और दुर्व्यवहार का शिकार होना पड़ता है बच्चों को। बच्चे दूसरे बच्चों को घूमते देखते हैं, कुछ नया करते देखते हैं तो उन में भी वो सब अपने माँ-बाप के साथ करने की इच्छा जागृत होती है लेकिन समय की कमी, अरूचि, काम के तनाव की वजह से पर्याप्त समाधान नहीं पाकर बच्चे स्वयं के माँ-बाप को आँकना शुरू करते हैं, उन्हें कमतर समझने लगते हैं और उनके प्रति आदर भाव भी कम कर देते हैं जो एक परिवार के रूप में सबसे बड़ी हार मानी जा सकती है। ऐसे पैरेंट्स मानते हैं कि अभी कमा लेते हैं और बाद में

सब इच्छाएँ पूरी कर लेंगें लेकिन वो बाद कभी नहीं आता। समय बदलने के साथ इच्छाएँ बदल जाती है और पिछली इच्छा की जगह कोई नई इच्छा उत्पन्न हो जाती है और उनको पूरा करने की तमाम मापदंड भी बदल जाते है। उदाहरण के तौर पर आज से 20 साल पहले कश्मीर देखने की इच्छा और अब कश्मीर देखने की इच्छा में ढेरों फर्क है। आज कश्मीर में 20 साल पहले जैसे बर्फ नहीं पड़ती, आज कश्मीर एयरपोर्ट पर क्लियर्स के लिए 2 घंटे लाइन में खड़े रहने पड़ता है, डल झील तब इतनी गन्दी और सिकुड़ी नहीं हुआ करती थी। बच्चों की इच्छाएँ बारिश की बूँद की तरह होती हैं यदि उनको समय रहते सही मिटटी मिले तो नया पौधा उग सकता है और उन्हें यूँ ही छोड़ दिया जाए तो धूप निकलते ही भाप बन कर कहीं उड़ जाएँगे और पीछे बच जाएगा- शून्य।

समाज में जो पहले से ही किसी और पर आश्रित है उन्हें और आश्रित नहीं आज़ाद बनाने की कवायद होनी चाहिए। माँ-बाप का अपने बच्चों के लिए कमाना कहीं से गलत नहीं है लेकिन जिसके लिए कमा रहे हैं उसी के लिए समय ना निकाल पाना, उनसे बात ना कर पाना, उनके साथ खेल ना पाना, उनकी तकलीफों और जरूरतों को ना समझ पाना बेहद गलत है। अगर दो व्यक्तियों की कमाई अपने ही बच्चे के चेहरे पर मुस्कान ना ला सके तो कमाई में कोई कमी तो जरूर है। पैसे कमाने से ज्यादा जरूरी है बच्चे कमाना और इस में सिर्फ एक ही चीज़ का 'इन्वेस्टमेंट' है - समय का। बच्चों के समय को अपना समय दीजिए, वर्ना यह समय निकल गया तो कोई समय इसे वापस नहीं ला सकता।

चुनाव में महिला आरक्षित सीटों पर पुरुषों का वर्चस्व!

मध्यप्रदेश सरकार ने नारी सशक्तिकरण की दिशा में कदम बढ़ाते हुए पंचायत चुनाव महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण दिया था। जिसका परिणाम ये रहा है कि इस बार कई जिलों में सरपंच और पंच के पदों पर महिलाएं चुनकर आई, लेकिन महिलाओं के चुनाव जीतने के बाद उनके नामांकन के दौरान वे नदारद रहीं और उनके परिजन नामांकन जमा कराते नजर आए। इतना ही नहीं पद और गोपनीयता की शपथ भी महिलाओं की जगह पुरुषों ने ही ले ली।

भूपेन्द्र भारतीय
देवास, मध्यप्रदेश

भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष बाद आखिरकार सबसे निचले स्तर से कोई महिला भारत की संवैधानिक प्रमुख राष्ट्रपति के पद पर पहुंच गई है। लेकिन यह यात्रा इतनी आसान भी नहीं है और महिलाओं का राजनीतिक व सामाजिक जीवन में पूर्ण रूप से सक्रिय होना व निर्णय लेने में सक्षम होना अभी बाकी है। भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी तो बढ़ी है लेकिन उनकी राजनीतिक सक्रियता व स्वतंत्रत रूप से राजनीतिक निर्णय लेने का अधिकार अभी पूर्ण रूप से महिला राजनीतिज्ञों के पास बहुत कम है।

वैसे तो हमारे देश के लोकतंत्र को परिपक्व व मजबूत लोकतंत्र कहा जाता है। लेकिन दिनोंदिन हर चुनाव में देखने को आता है कि महिला आरक्षित सीटों पर अधिकांश चुनावी क्षेत्रों में पुरुषों का ही वर्चस्व रहता है। कई महिला जनप्रतिनिधियों से चुनाव जीतने पर जब यह प्रश्न किया जाता है कि अब आप अपने क्षेत्र की जनता के लिए क्या करेगी या फिर क्या करना चाहती हैं तो वे अगल-बगल देखते हुए अपने पति या फिर रिश्तेदार की ओर देखती है। और बहुत सी महिला जनप्रतिनिधि खुलेआम कहती है कि जो भी निर्णय होगा, 'उनके पति या फिर रिश्तेदार ही करेंगे।' महिलाओं की राजनीतिक स्थिति का यह धरातल पर यही हाल है। ओर जब खासकर पंचायत व नगरीय निकाय के चुनावों में महिलाओं के विकास के लिए विशेष आरक्षण किया गया है। तो इन चुनावों में महिला उम्मीदवार तो होती है पर सबकुछ किया जाता है उनके पति, भाई, ससुर या फिर नजदीकी रिश्तेदारों के द्वारा। कुल मिलाकर पुरूषों के द्वारा ही निर्वाचित महिला जनप्रतिनिधि का सारा कार्य किया जाता है। जो कि लोकतंत्र के मूल

उद्देश्यों के विपरीत है। यहां आंकड़ों में स्थिति अलग है और धरातल पर वास्तविकता बहुत कुछ अलग है।

एक सर्वेक्षण के माध्यम से यह ज्ञात हुआ कि महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में पुरुषों का वर्चस्व मुख्य बाधकों में से एक है। 50 वर्ष से अधिक उम्र की दो-तिहाई महिलाओं का मानना है कि पुरुषों के राजनीतिक वर्चस्व के कारण महिलाओं को राजनीति में अवसर नहीं मिलता, जबकि 20-25 वर्ष की आधी महिलाओं की राय इसके विपरीत है। अधिकांश राज्यों में पंचायती व नगरीय निकाय चुनावों में महिला के लिए आरक्षण करीब 25-30 वर्ष पहले लागू हो गया है। लेकिन इन राज्यों में महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता कोई अच्छी नहीं है। देखने व पढ़ने में आया है कि

अधिकांश महिला उम्मीदवार चुनाव अपने पति व रिश्तेदारों के कहने पर ही लड़ती है। उन्हें राजनीतिक कार्यप्रणाली के विषय में कोई जानकारी व व्यवहारिक ज्ञान नहीं होता है। अधिकांश महिला जनप्रतिनिधि का सारा कार्य उनके पति , रिश्तेदार व उनके दल वाले ही करते हैं। इनका किसी भी राजनीतिक निर्णय लेने में स्वतंत्र मत नहीं रहता है।

मुख्यतः पंचायती राज व नगरीय निकाय चुनावों में महिला आरक्षण महिलाओं को समाज की मुख्य धारा में लाने के लिए किया गया था। लेकिन इस संवैधानिक व्यवस्था का उद्देश्य पूरा होता दिख नहीं रहा है। आज भी अधिकांश चुनावी क्षेत्रों में महिला उम्मीदवार घरों में ही बैठी रहती है और उनके पति, भाई, पिता व अन्य रिश्तेदार उनकी जगह राजनीति करते है। आज भी अधिकांश महिलाओं का मानना है कि घरों में राजनीतिक निर्णय लेने में उन्हें कम स्वायत्तता प्राप्त होती है। इसका मुख्य कारण पितृसत्तात्मक समाज तथा रूढ़िवादी सामाजिक ढाँचा है। वैसे एक कारण यह भी है कि राजनीति में दिनोंदिन भ्रष्टाचार, बेईमानी, परिवारवाद, राजनीतिक दलों में पुरूषों का वर्चस्व, धन-बल की पकड़, गुंडागर्दी आदि कारणों से सामान्य घरों की महिलाओं की रूची राजनीति में ना के बराबर है। और वही भारतीय समाज में यह धारणा बना दी गई है कि महिलाओं के लिए राजनीतिक क्षेत्र ठीक नहीं है। पुरूषवादी समाज ने स्वयं को राजनीतिक क्षेत्र का ठेकेदार घोषित किया हुआ है। हालाँकि विगत कुछ वर्षों में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई है लेकिन एक सर्वेक्षण में लगभग 66इ महिलाओं ने कहा कि वे राजनीतिक निर्णय लेने के मामले में अभी भी स्वायत्त नहीं हैं।

भारतीय संविधान में 73वें और 74वें संशोधन द्वारा महिलाओं के लिये स्थानीय निकाय की एक-तिहाई सीटों के आरक्षण का प्रावधान किया गया है लेकिन राजनीति में महिलाओं की समान भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये अन्य प्रयास किये जाने की भी अतिआवश्यकता है। विधानसभाओं व संसद में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण बिल कब से ही लंबित है ! स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के अवसर पर भारत की आधी आबादी के राजनीतिक अधिकारों के विषय में इस ओर चुनाव आयोग,भारत सरकार, बुद्धिजीवीयों व जागरूक शिक्षित महिलाओं को इस विषय पर चिंतन, मनन व विचार करना चाहिए।

देशभक्ति

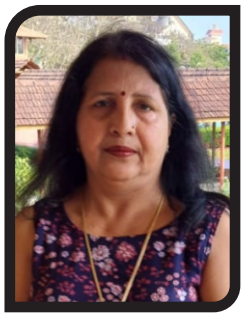

प्रो उषा झा रेणु
देहरादून

ऐ वीर शत शत है नमन ,
भींगे हृदय झरते नयन ।
आजाद भारत के सपन ,
उर भर हुए जग से गमन ।

रास्ता दिखा तुम खो गए
तुम बीज नूतन बो गए ।।
सुन वीर तेरा ये कथन ।
सहना नहीं गोरे दमन ।।
सिर बाँध लेना तुम कफन ।

शोणित बहा नित वीर का ।
हो मोल माँ के नीर का ।।
अनमोल आँचल लाल थे ,
जो शौर्य टीका भाल थे ।।
सब हर घड़ी कर ले मनन।
ऐ वीर शत शत है नमन ।।

वो मर मिटे जो देश पर ,
उनको सभी बस याद कर ।
खिलता रहे भारत चमन ।
यश कीर्ति फैले गगन ।।
तुम हिन्द के प्यारे ललन ।
ऐ वीर शत शत है नमन ।।

जनगण रहे बस आन तब ।
माँ भारती सम्मान जब ।।
मिलकर सभी दुश्मन भगा।
भारत अलख नव नव जगा ।।
नित हो यही सबसे यतन ।
ऐ वीर शत शत है नमन ।।

'राष्ट्रध्वजा फहरायें'

आज दिवाकर के रथ पर चढ़ किरणें दमक रही हैं,
रक्तिम आभा भारत के कण - कण में घोल रही हैं।
चटख पड़ी हैं कलियाँ अपना सौरभ लुटा रही हैं ,
आज़ादी का नया तराना कोकिल सुना रही है।

पंखुड़ियों में लाली भर कर है गुलाब मुस्काया,
सदियों के ही संघर्षों पर यह मीठा सपना पाया।
आज हरष से हरित हो उठी इस धरती की काया,
नील गगन में आज़ादी का झंडा है लहराया।

आओ हम सब भी मुस्कायें इस झंडे के नीचे,
सत्य , अहिंसा और प्रेम से इस झंडे को सींचें।
प्रण कर इसकी रक्षा का व्रत हमसब को है लेना,
सदा देश की रक्षा हित , है तन - मन - धन सब देना।

लाल रंग पूरब की लाली जागो देश के वीरों,
लाल देश की मिट्टी है और लाल खून की लाली।
श्वेत , शांत , सौजन्य प्रतीक है हम सब वीरों का,
हरा रंग है शस्य - श्यामला धरती की हरियाली।

गोल चक्र है पहिया रथ का भारत की धरती का,
सत्य , अहिंसा और शान्ति का फैलाता संदेशा।
गाता है यह गीत प्रगति का , गा - गा कर कहता ह,
आयें लाखों विघ्न , रुकेंगे , नहीं एक भी क्षण हम।

आओ , आया आज समय , हम संकल्पों को दुहरायें,
छोड़ो बीती बात , नया हम हिन्दुस्तान बनायें।
देश की सेवा में ही जीवन हम अर्पित कर जायें,
आओ मिलकर आज , तिरंगा राष्ट्रध्वजा फहरायें।

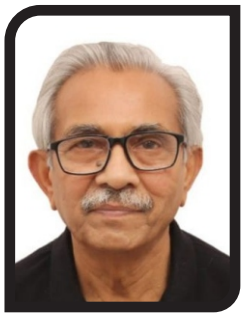

विजय कुमार सिन्हा 'तरुण'
देहरादून

बर्ड नेचर पार्क
एक कदम हरियाली की ओर

पवन तिवारी
पूर्व वरिष्ठ उपसंपादक
अमर उजाला

कौन कहता है कि ओजोन परत का छेद भर नहीं सकता एक पौधा तो तबीयत से लगाओ यारों, इसी सूत्र वाक्य के साथ ग्रीन हाउस क्लब के सदस्य बर्ड नेचर पार्क की परिकल्पना को साकार रूप देने में तन मन और धन से जुटे हुए हैं। इसके लिए सरेसर और नसीरपुर गांवों की मिट्टी चुनी गई है जहां शहरों के बीच फॉरेस्ट लैंड की उपलब्धता है। पेड़ धरती पर सबसे पुराने जीव हैं जो कभी ज्यादा उम्र की वजह से नहीं मरते और एक पेड़ एक दिन में इतना ऑक्सीजन दे देता कि चार आदमी जिंदा रह सकें। ऑक्सीजन की जरूरत को मानव जाति ने कोरोना काल में शिद्दत से महसूस किया था, बावजूद इसके अपने ही जिले में पेड़ों को कटने से बचाने के प्रयास नहीं हो रहे हैं। इन्हें बचाने के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार वन विभाग ही अपनी जिम्मेदारी को निभाने में असफल साबित हो रहा है।

जिले की संस्था ग्रीन हाउस क्लब ने पर्यावरण संरक्षण की पहल शुरू की है। बीते 20 वर्षों से संस्था इसके लिए प्रयासरत है। संस्था के सदस्यों ने जिले के नसीरपुर और सरेसर वन क्षेत्र को बर्ड नेचर पार्क के रूप में विकसित करने का बीड़ा उठाया है। आइए जानते हैं क्या है बर्ड नेचर पार्क और इसकी उपयोगिता।

सरेसर में दो लाख 15 हजार वर्ग मीटर और नसीरपुर में तीन लाख 70 हजार वर्ग मीटर का क्षेत्र फॉरेस्ट लैंड के रूप में मौजूद है। दोनों इलाकों में कुल पांच लाख 85 हजार वर्ग मीटर के इलाके में पेड़ पौधों की बहुतायत है। सरेसर में 34इ एवं नसीरपुर में 25इ जल क्षेत्र भी स्थित है। यहां कुल छोटे बड़े पांच तालाब भी मौजूद हैं जो इलाके को ठंडक प्रदान करते हैं। इस इलाके की यह विशेषता है कि नौगढ़ और चकिया के जंगलों को छोड़ दिया जाए तो जिले भर में इतना बड़ा वन क्षेत्र कहीं नहीं है। यह इलाका वाराणसी के कैथी से चकिया जाने का पंछियों का उड़ान पथ भी है। यहां साइबेरियन पक्षियों का आवागमन भी होता है। यही वजह है कि ग्रीन हाउस क्लब ने इस स्थान को पक्षियों के विश्राम स्थल के रूप में माकूल पाया है। संस्था की कार्ययोजना में क्षेत्र की तारबंदी कर इसे संरक्षित क्षेत्र बनाने की सोच शामिल है। वन विभाग की देखरेख में इस क्षेत्र को विकसित कर यहां के तालाबों का सुंदरीकरण कर वोटिंग की जाए और फॉरेस्ट लैंड में टॉय ट्रेन चलाकर इससे होने वाली आय से बर्ड नेचर पार्क का खर्च निकाला जा सके। वन क्षेत्र को कई सेक्टरों में बांटकर पंचवटी पौधों का रोपण कर वनाच्छादित करने की योजना भी है। पक्षी मित्र पौधों के रोपण से यहां पक्षियों के विश्राम स्थल बनाने की योजना को बल मिलेगा। बर्ड नेचर पार्क समाज और प्रकृति के सहजीविता के लिए सेतु का काम करेगा। इससे यहां पर्यटन और छोटे रोजगार का सृजन होगा, पर्यावरण लाभ से आसपास के लोग लाभान्वित होंगे प्रकृति के नजदीक रहने से स्वास्थ्य और सुरक्षा दोनों के दृष्टिकोण से लोगों को फायदा मिलेगा। पक्षी विहार जैव विविधता को बढ़ावा देने की दृष्टि से भी आवश्यक है। संस्था ने इसके लिए अथक प्रयास भी किए हैं। अलीनगर से पचपेड़वा तक एक से एक हजार अभियान चलाकर पौधों को गोद लेकर उनके रखरखाव के लिए लोगों को न सिर्फ प्रेरित किया बल्कि बीते वर्षों में मानव श्रृंखला बनाकर और पद यात्राएं निकालकर हरियाली का संदेश देने की भी कोशिश की। इस वर्ष वन क्षेत्र में काटे गए पौधों को श्रद्धांजलि दी गई और पेड़ों से चिपक कर चिपको आंदोलन के माध्यम से उन्हें बचाने का संकल्प लिया गया। संस्था ने पक्षी विहार परिकल्पना के प्रोजेक्ट रिपोर्ट को शहरी विकास एवं ऊर्जा मंत्री एके शर्मा को भेजा है और देश की सबसे बड़ी पंचायत में मामले को उठाने के लिए जिले की बेटी और राज्यसभा सदस्य दर्शना सिंह को दायित्व सौंपा है। संस्था के वरिष्ठ सदस्य संजय जायसवाल बताते हैं कि हम सभी का प्रयास छोटे-छोटे शहरी जंगलों का निर्माण है जिससे प्रकृति और मानव के बीच सामंजस्य स्थापित हो सके। संस्था के ही सतीश चंद्र पाठक की सोच है कि पक्षी विहार को मूर्त रूप देने के लिए समाज के हर तबके का सहयोग जरूरी है।

■■

'दिल में एक समंदर...'

वक्त की कोई पाबंदी नहीं
जमीं पर कोई पहरेदार नहीं
खुलकर बरस...,
टूटकर बरस...,,
इस शहर का
कोई राजदार नहीं ।।

दिल में एक समंदर रक्खा है !
डूबने को हर एक मंजर रक्खा है !!

डर है...,
उसके स्वप्नों पर
हो जाए कहीं
कोई दावेदार नहीं ।
इस पत्थर शहर का
कोई राजदार नहीं ।।

हमारी प्यास जब पहुंची शिखर तक !
हमने उसने सब ने देखा प्रखर तक !!

हिमालय की चट्टानों से,
कई झरनें निकल आए

कंठ तक प्रेम डूबा,
प्यास हो जाए कहीं खार नहीं ।
इस पत्थर शहर का
कोई राजदार नहीं ।।

वक्त की कोई पाबंदी नहीं
जमीं पर कोई पहरेदार नहीं ।
खुलकर बरस...,
टूटकर बरस...,,
इस पत्थर शहर का
कोई राजदार नहीं ।।

मनोज शाह 'मानस'
दिल्ली

तुमने देखा नहीं

सुमति श्रीवास्तव
जौनपुर

इन मुस्काते चेहरे में छिपे दर्द को।
भूख से पीले पड़े चेहरे सर्द को।
तुमने देखा नहीं या देख न सके।।

मासूम जिंदगी को
जिंदगी का बोझ ढोते हुए।
कहीं किसी कोने में,
मां को रोते हुए।।
धूल में खोए हुए बचपने को,
मजबूर जरूरत में डूबे अपने को।
क्यो तुम्हारे कदम नहीं रुके।
तुमने देखा नहीं या देख न सके।।

एक रोटी के टुकड़े को झाड़।
खाना गंदे चेहरे की लेकर आड़।।
तड़पती तनहाईयों में
मरना जिंदगी का।
आंखों में आंसू लेकर
सिसकना बंदगी का।।
क्यों सर तुम्हारे वहां नहीं झुके,
तुमने देखा नहीं या देख न सके।।

गोद में हड्डियों का पिंजर लेकर,
जिंदगी तरस न खाती जीकर।
धंसी आंखों में रहम की आस ,
दो जून रोटी व जीने की प्यास।

क्यों बहरे कान हुए जमींदार के,
क्यो फेंके भोजन हज़ारों का ।
होती मौत इन खानों पे गिर के।
तुमने देखा नहीं या देख न सके।।

'महिला लेखिकाओं की विडम्बना'

(चुम्बन शब्द में जैसे करंट छिपा हो....!)

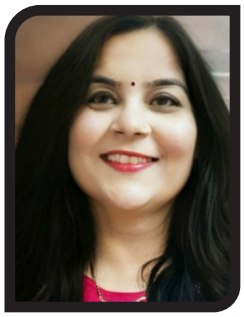

भावना ठाकर 'भावु'
बैंगलुरू

भले आज महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हो पर हमारे समाज में महिला लेखिकाओं को बहुत सारी विडम्बनाओं का सामना करना पड़ता है। इतिहास गवाह है अम्रिता प्रितम हो, परवीन शाकिर हो, कृष्णा सोबती हो या विदेशी लेखिका वर्जीनिया वुल्फ हो जिसने भी लेखन के ज़रिए आवाज़ उठानी चाही समाज ने उसे दबाना चाहा। औरतों को आक्रोश उड़ेलने का जैसे कोई हक ही नहीं। खास कर पुरुष लेखकों के बीच खुद को सक्षम रुप से प्रस्थापित करना मुश्किल होता है। वो इसलिए कि हमारा समाज आज भी स्त्रियों के प्रति उतनी उदारवादी निति नहीं रखता। महिलाओं के लिए एक सीमा तय कर दी जाती है। पहले तो घर का माहौल ही महिलाओं को आगे बढ़ने पर तंज कसता है, महिला की बुद्धि का अंदाज़ा नहीं लगाते और सोचते है की लिखना औरतों का काम नहीं। और फिर महिलाओं को घर परिवार देखते जो समय बचता है उस समय को एडजस्ट

करते लेखन के लिए समय निकालना पड़ता है। और जैसे ही लिखने बैठती है कि घरवालों की भौहे तन जाती है। कोई प्रेम से नहीं कहता की जा अपना शौक़ पूरा कर ले। कुछ महिला लेखिकाएं सक्षम होने के बावजूद उस दायरे से निकल कर लिखने से हिचकिचाती है। और लिखती भी है तो कुछ विषयों से दूरी बनाकर, जैसे राजकारण पर, वेश्यावृत्ति पर और सेक्स जैसे विषयों से परे रहती है। और कुछ शब्दों का चयन करने से घबराती है, सेक्स के उपर लिखने से घबराती है, पति पत्नी के अंगत रिश्ते पर या ऐसे किसी भी विषय पर लिखने से कतराती है। ये सोचकर की मेरा इस विषय पर लिखा अगर घरवाले या मेरे पति पढ़ेंगे तो क्या सोचेंगे। और सच में कुछ शंकाशील पतियों को अपनी लेखिका पत्नियों द्वारा लिखे ऐसे लेखों पर ऐतराज भी होता है। इसी वजह से बहुत सी लेखिकाएं मुखर होने से डरती है, और जो आज़ाद खय़ालों वाली मुखर होकर लिखती है तब समाज की नाराज़गी का शिकार होते बहुत कुछ सहती है।और ऋंगार रस पर जितना खुलकर पुरुष लेखक लिख लेते है उतना महिलाएं नहीं लिख पाती, यहाँ भी वही विडम्बना कि लोग क्या सोचेंगे। चुम्बन शब्द में जैसे करंट छिपा हो, उन्नत उरोज लिखना जैसे पाप हो या प्रेम की चरम का वर्णन जैसे निम्न कक्षा का लेखन हो गया। खास कर ये सब जब एक महिला लिखती है तो लोगों की आँखें निकल आती है। ये मुद्दा भी मैं तो कहूँगी स्त्री विमर्श का हिस्सा ही माना जाए। जब माँ सरस्वती का वरदान किसी पर होता है तभी कोई चार पंक्तियाँ लिख पाता है, तो महिला लेखिकाओं का पूरा सम्मान होना चाहिए। माना कि लज्जा स्त्री का गहना होता है पर उस गहने को घुटन बना लेना गलत है।

कई लेखिकाएं घरवालों से छुप छुपकर लिखती है या कोई ओर नाम या पहचान बनाकर लिखती है। इस मसले पर इतना ही कहूँगी की इसमें घरवालों का कम जो दमन सह रही है उसका दोष ज़्यादा है। लेखन कोई ऐसा काम तो नहीं जिस पर शर्मिंदा हो या छुप-छुपकर करना पड़े। ये कायरता है अपने हक अस्तित्व के लिए कीड़े- मकोड़े भी लड़ते है। एक लेखक होकर ऐसी मानसिकता सहन करना बिल्कुल गलत बात है। लेखक का काम होता है गलत के विरुद्ध आवाज़ उठाना समाज को जगाना फैली हुई बदी को उजागर करके समाधान की दिशा में ले जाना। इसलिए शुरुआत खुद से होनी चाहिए। वरना ऐसे खोखले विचार लिखने का मतलब क्या है। दबने और डरने वालों को दुनिया कमज़ोर समझती है। अपने हक के लिए और सच के लिए आवाज़ उठानी चाहिए। लेखक को बेखौफ़ और बेबाक होना चाहिए।मैं ये कहूँगी कि अगर आप एक सच्चे लेखक है तो शर्म, संकोच और डर को त्याग कर बिंदास अपने विचार लिखने की हिम्मत करनी चाहिए। शब्दों की मर्यादा में रहकर हर मुद्दे को उजागर करते लिखना हर लेखक का अधिकार है, वो चाहे स्त्री हो या पुरुष। पर महिलाओं को मुखर होने में और समाज को इस सोच को अपनाने में शायद अभी कुछ समय ओर लगेगा। महिला लेखिकाओं का जीवन संघर्षों से टकराता ही मिलेगा।

■■

बेनाप प्रेम

एक बार एक ग्वालन दूध बेच रही थी और सबको दूध नाप नाप कर दे रही थी । उसी समय एक नौजवान दूध लेने आया तो ग्वालन ने बिना नापे ही उस नौजवान का बरतन दूध से भर दिया।

वही थोड़ी दूर पर एक साधु हाथ में माला लेकर मनको को गिन गिन कर माला फेर रहा था। तभी उसकी नजर ग्वालन पर पड़ी और उसने ये सब देखा और पास ही बैठे व्यक्ति से सारी बात बताकर इसका कारण पूछा ।

उस व्यक्ति ने बताया कि जिस नौजवान को उस ग्वालन ने बिना नाप के दूध दिया है वह उस नौजवान से प्रेम करती है इसलिए उसने उसे बिना नाप के दूध दे दिया।

यह बात साधु के दिल को छू गयी और उसने सोचा कि एक दूध बेचने वाली ग्वालन जिससे प्रेम करती है तो उसका हिसाब नही रखती और मैं अपने जिस ईश्वर से प्रेम करता हुँ, उसके लिए सुबह से शाम तक मनके गिनगिन कर माला फेरता हुँ। मुझसे तो अच्छी यह ग्वालन ही है और उसने माला तोड़कर फेंक दी।

जीवन भी ऐसा ही है। जहाँ प्रेम होता है वहाँ हिसाब किताब नही होता है, और जहाँ हिसाब किताब होता है वहाँ प्रेम नही होता है, सिर्फ व्यापार होता है ।

अतः प्रेम भलेही वो पत्नी से हो , भाई से हो , बहन से हो , रिश्तेदार से हो, पडोसी से हो , दोस्त से हो या फिर भगवान से । निस्वार्थ प्रेम कीजिये जहाँ कोई गिनती न हो , बस प्रेम हो ।

देवेन्द्र कुमावत
स्टेट ब्यूरो चीफ राजस्थान

रक्षाबंधन पर्व की मिठास

रक्षाबंधन के त्योहार पर बहनें अपने भाई की कलाई पर राखी बांधकर उनकी सलामती की कामना करती हैं। वहीं भाई भी अपनी बहनों को रक्षा का वचन देते हैं। रक्षाबंधन का पर्व हर साल श्रावणी पूर्णिमा पर बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया जाता है। लेकिन इस बार रक्षाबंधन के पर्व को लेकर काफी उलझन है। इस बार श्रावण मास की पूर्णिमा एक दिन न होकर दो दिन रहेगी। वहीं ज्योतिष के अनुसार 11 और 12 अगस्त को श्रावण की पूर्णिमा का संयोग बन रहा है। रक्षा बंधन दो शब्दों को मिलाकर बनता है, रक्षा और बंधन। जिसका मतलब एक ऐसा बंधन जो रक्षा करता हो। रक्षा बंधन भाई-बहन का प्रतीक माना जाता है। रक्षा बंधन भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को जताता है और घर में खुशिया लेकर आता है। इसके अलावा यह त्योहार भाईयों को याद दिलाता है कि उन्हें अपनी बहनों की रक्षा करनी चाहिए। रक्षाबंधन पर्व पौराणिक कथाओं के अनुसार देवी लक्ष्मी ने श्रावण पूर्णिमा के दिन राजा बलि को राखी बांधकर उनसे अपने स्वामी को

बैकुंठ नहीं त्यागने का वचन लिया। बहन की कामना जानकर राजा बलि ने भगवान विष्णु जी से बैकुंठ में ही रहने की विनती की और इस तरह उन्होंने अपनी बहन के सुहाग की रक्षा की। इसीलिए, राखी के त्योहार को 'बलेवा' भी कहा जाता है। द्वापरकाल की कथा कहती है कि जब श्री कृष्ण ने शिशुपाल को मारा था तो उनके हाथ खून में सन गए थे। फिर द्रौपदी नें अपनी साड़ी का पल्लू फाड़कर कृष्ण जी के हाथ में बांध दिया था। जिसके बदले श्री कृष्ण ने द्रौपदी को मुसीबत के समय सहायता करने का वचन दिया। दूसरी कथा यह है कि गणेश जी के दोनों पुत्रों को कोई बहन नहीं थी। इसलिए उन्होंने अपने पिता से जिद की कि उन्हें भी एक बहन चाहिए। इसलिए तब नारद जी के हस्तक्षेप करने पर बाध्य होकर भगवान् गणेश को अपनी शक्ति प्रयोग से संतोषी माता को प्रकट किया। यह रक्षा बंधन की ही पवित्र दिवस था।इतिहास कहता है कि करीब सन 300 बीसी में ऐलेक्जेंडर की वाइफ को रक्षा बंधन के बारे में पता चला तो उसने सम्राट पुरु के लिए राखी भिजवाई। उनका राखी भिजवाने का मकसद यह था कि जिससे सम्राट पुरु उनके पति को जान से न मार दें। इसलिए पुरु ने ऐलेक्जेंडर की पत्नी की भेजी हुई राखी का रिश्ता निभाया और ऐलेक्जेंडर को नहीं मारा इसके अलावा मुगल बादशाह बाबर और रानी कर्मावती की राखी का किस्सा इतिहास के पन्नों में दर्ज है। यही है इस रक्षाबंधन पर्व की पवित्र रिश्तों की मिठास जो जाति धर्म मजहब से बहुत ऊपर है। यही है हमारी भारतीय संस्कृति वैभव और विराट।

विज्ञापन शुल्क निम्न प्रकार से है

- **कलर पेज फूल पेज ₹ 20000 मात्र**
- **हाफ पेज ₹10000 मात्र**
- **ब्लैक एंड व्हाइट फूल पेज ₹12000 मात्र**
- **हाफ पेज ₹6000 मात्र**
- **रंगीन पेज पर छोटा विज्ञापन ₹2000 मात्र**
- **ब्लैक एंड व्हाइट पर छोटा विज्ञापन ₹1000 मात्र**

विज्ञापन के लिए शुल्क निम्न बैंक खाता में जमा करा सकते हैं:

Account Name: **Sach Ki Dastak**
A/c. No. : **13751652000024**
IFSC Code : **PUNB0137510**
Bank: **Punjab National Bank**

Gpay-
(1) 9045610000
(2) 9621503924

मुहल्ले की चौपाल

डॉक्टर विद्या सिंह
देहरादून

जब से मुहल्ले में मिसेज़ लाल आई हैं, महिलाओं की बैठकें और रौनकदार हो गई हैं। अब उनकी बातों के केन्द्र में अक्सर मिसेज़ लाल होती हैं और उनके ठहाके पहले से ज्यादा ज़ोर से गूँजने लगे हैं। मिसेज़ लाल की नकल उतारना, उनकी खिल्ली उड़ाना महिलाओं का पसंदीदा मनोरंजन हो गया है।

जाड़ा, गर्मी, बरसात कोई भी मौसम हो, बैठक बिना नागा जमती है। मुहल्ले की चार पाँच महिलाएँ उसमें नियमित रूप से आती हैं, बाकी अपनी सुविधा से, जब उनका जी चाहे।

अधिकतर बैठक गुप्ता जी के घर पर ही होती है। तीन ओर से हेज़ से घिरे लॉन से सटे हुए पक्के फर्श पर, किनारे बिछे लंबे चौड़े तख्त पर बैठ कर महिलाएँ सब्जी काटने, साड़ी में फाल लगाने जैसे कामों को भी अंजाम देती हैं। चूंकि बैठक प्रायः मिसेज़ गुप्ता के आंगन में होती है, अतः चाय का जिम्मा सिर्फ़ उनका नहीं है। कोई भी महिला उठ कर जाती है और अपने घर से चाय बना लाती है। चाय वितरण में अन्य महिलाएं मदद कर देती

हैं। सरकारी फैक्टरी की कॉलोनी के इस मुहल्ले के सभी पुरुष एक ही जगह काम करते हैं। कोई प्रशासन विभाग में है, कोई विक्रय में तो कोई प्रोडक्शन में। घर से कोई अमीर हो या गरीब यहां सब एक पे स्केल में हैं। इस लिए सबके बीच में बराबरी का नाता है, कोई तड़ी दिखाना चाहे तो बैठे अपने घर में!

ये मकान सी टाईप के हैं लेकिन प्रोमोशन होते ही लोग सी टाईप से डी में चले जाते हैं। शुरू शुरू में आते-जाते हैं, किन्तु धीरे धीरे आना-जाना होली दिवाली तक सिमट जाता है। लोग नये मुहल्ले में रम जाते हैं, ऊपर से सी टाइप वालों से मेलजोल रख कर वे डी टाइप वालों के बीच में अपनी हेठी नहीं कराना चाहते। मकान का टाइप बदलते ही बहुत कुछ बदल जाता है। मसलन बच्चे भी अपने को कुछ सुपीरियर समझने लगते हैं और स्कूल में उनका रुतबा बढ़ जाता है। दुकानदार देर से खड़े ग्राहक की परवाह न कर, पहले उन्हें सामान देने लगते हैं। ऑफिसर्स क्लब की सदस्यता भी डी टाईप वालों को ही मिलती है,यह अलग बात है कि कुछ लोग डी टाईप मिलने पर भी वहां जाने से मना कर देते हैं। उन्हें वहां का माहौल रास नहीं आता। सब अपने-अपने में सिकुड़े सिमटे...।

मिस्टर गुप्ता और मिस्टर मेहता इसी श्रेणी के लोगों में शुमार हैं। उनकी पत्नियों का दिल इसी मुहल्ले मे लगता है और उन्होंने यहां से कहीं और जाने से साफ़ मना कर दिया है। जिस समय मिसेज़ लाल का सामान ट्रक से उतारा जा रहा था, अपनी खिड़की से झांक-झांक कर मिसेज़ मेहता उनकी आर्थिक स्थिति की टोह ले रही थीं और यह देख कर उन्हें अचरज हुआ कि वे तो अपनी एक जगह जमी गृहस्थी में भी इतना सामान नहीं जोड़ पाईं, जितना मिसेज़ लाल के पास ट्रांसफ़र की नौकरी में है।एक दिन बैठक में मिसेज़ लाल की बातें होने लगीं।''तुम उनसे मिलने नहीं गईं मिसेज़ मिश्रा? भाई सबसे पहले जाने का फ़र्ज तो तुम्हारा बनता है।'' मिसेज़ गर्ग ने मिसेज़ पुरोहित को कनखियों से इशारा करते हुए कहा। "हां, हां खास पड़ोसिन तो यही हैं।'' मिसेज़ पुरोहित ने हाँ में हाँ मिलाई। ''लेकिन सावधान भी रहना, कहीं पहले वाली की तरह लड़ाका निकली, तो दूर की ही नमस्ते भली।''

तुम भी कमाल करती हो मिसेज़ मेहता! यह भी किसी के चेहरे पर लिखा रहता है क्या ? बरतने से ही मालूम होता है।'' मिसेज़ पुरोहित ने टीप दी।

मिसेज़ मिश्रा से अब चुप नहीं रहा गया। ''मैं तो नहीं गई, वही आई थी मेरे पास, दूध के लिए पूछ रही थी।'' अपने को ऊपर रखने की चाह उनकी बातों में स्पष्ट थी। ''तो तुमने क्या कहा? अपने दूध वाले से लगाने को तो नहीं बोल दिया? वैसे ही आज कल पानी जैसा दूध दे रहा है।'' मिसेज़ मेहता के स्वर में चिन्ता घुली थी। वह नहीं चाहतीं कि उनके दूध वाले के ग्राहकों की संख्या बढ़े। ''नहीं ! मैं क्या तुम्हें बेवकूफ दिखती हूं? कह दिया दूधिया से लगवा लेना, अच्छा दूध वाला बता दूंगी।'' ''वैसे भी वह बेचारी दो छोटे बच्चों को ले कर दूध लेने कैसे जाएगी?''इस बार मिसेज़ गुप्ता थीं।

''उसकी मत कहो, सही दूध के लिए सब चले जाएंगे। वह नहीं जाएगी अपने आदमी को भेज देगी।''

''आदमी उसका सुबह-सुबह परेड में जाएगा कि दूध लेने जाएगा।'' मिसेज़ गर्ग ने आंखें नचा कर कहा।

मिस्टर लाल सी. आई. एस. एफ. में सिक्योरिटी इंस्पेक्टर के पद पर तैनात हैं। उनका नया नया ट्रांसफर यहां हुआ है। वैसे सी. आई. एस. एफ. की पूरी बटालियन के लिए अलग क्वार्टर, मेस सब फैक्टरी के मेन गेट के पास ही बना है, लेकिन परिवार के साथ आने वालों के लिए इस मुहल्ले का एक क्वार्टर रिज़र्व है। उनसे पहले उस मकान में शर्मा परिवार रहता था। सिक्योरिटी इंस्पेक्टर के लिए सी टाईप और डिप्टी कमान्डैन्ट के लिए डी टाईप का मकान आबंटित होता है। केन्द्रीय कर्मचारी होने के नाते उनका वेतन, अवकाश सब फैक्टरी, जो सरकारी उपक्रम है और जो फैक्टरी ऐक्ट से संचालित है, के नियम से अलग रहता है। इसी लिए जो भी इस मकान में आता है, मुहल्ले के लोगों की ट्यूनिंग उनसे ज़रा कम ही होती है। ''यह जगह उन्हें रास नहीं आ रही है। इसी लिए वे लोग अपना पूरा लगेज़ नहीं खोल रहे हैं। हो पाया तो जल्दी ही ट्रांसफ़र करा लेंगे।'' मीटिंग में मिसेज़ मिश्रा ने सबको उनके नए अपडेट्स दिए।

''यहां भी ले आना उनको किसी दिन।'' मिसेज़ गुप्ता ने मिसेज़ मिश्रा से कहा। '' हाँ भाई अकेले-अकेले चाय पी आती हो।'' मिसेज़ मेहता ने तुक्का मारा।

''तुम लोग तो ऐसे कह रही हो, जैसे मेरी उससे बड़ी गहरी फ्रेंडशिप हो गई है। अभी तक तो मैं उसके घर भी नहीं गई

बैठने। बस सीढ़ियों में मिल जाती है तो बात हो जाती है।'' मिसेज़ मिश्रा झुंझला पड़ीं।

बात बदलने के इरादे से मिसेज़ पुरोहित ने बालिस्त भर बुना हुआ स्वेटर दिखाते हुए कहा,''ज़रा देखो यह चौड़ाई इसके पापा के लिए ठीक रहेगी?''

''दो सलाई पर कर के दिखाओ।'' मिसेज़ मेहता एक्स्पर्ट राय देने के लिए तैयार हो चुकी थीं।

''भाई साहब के लिए बना रही हो, कितने फन्दे डाले हैं?''

''एक सौ पांच।''

''अरे कम से कम एक सौ बीस तो होते।''

''अब?''

''अब क्या? उधेड़ो।''

''तुमने बुना है, तुम्हें दर्द लगेगा, इधर लाओ।'' बोलने के साथ ही मिसेज़ मेहता ने उनके हाथ से स्वेटर ले लिया और देखते देखते उधेड़ कर ऊन का गोला मिसेज़ पुरोहित के हाथ में पकड़ा दिया। सभी महिलाएं खिलखिला पड़ीं। स्वेटर उधेड़वाने में उन्हें बड़ा आनन्द मिलता है। आज मिसेज़ पुरोहित हत्थे चढ़ गईं। वह खिसिया गईं।

'' देखो-देखो, कहीं जा रही है अपने हस्बैंड के साथ।'' स्कूटर पर बीवी बच्चों को ले कर मिस्टर लाल सामने से गुज़रे तो मिसेज़ गर्ग ने बगल में बैठी गुप्ता को टहोका मारा,

''पहनना-ओढ़ना तो अच्छा लगता है इसका!''

''कपड़े भी सुबह-सुबह धुल के टंग जाते हैं।''

''चलो क्वार्टर की तकदीर जगी, इसके पहले वाली तो सड़ा कर रखती थी घर।''

देखते- देखते लाल परिवार के बारे में एक स्वस्थ राय मुहल्ले में कायम हो गई।

मिसेज़ मिश्रा पर यह जिम्मेदारी डाली गई कि वह उन्हें किसी दिन बैठक में जरूर लाएं।

आज पहली बार मिसेज़ लाल बैठक में आई हैं।

मिसेज़ लाल से मिल कर महिलाएँ बड़ी मायूस हुई। लंबी, पतली, लंबे बालों वाली, दूर से वह जितनी आकर्षक दिखती हैं, उनके मुँह खोलते ही सब पर पानी फिर जाता है। खड़ी बोली में अवधी मिला कर वह इस तरह बोलती हैं कि उनकी भाषा न खड़ी रह जाती है न अवधी । चेहरे पर भी अजीब किस्म की दयनीयता पसरी रहती है।

''आप लोग तो बहुत गुनी हैं, हमको तो कुछ भी नहीं आता।'' मिसेज लाल ने सबको स्वेटर बुनते देख कर कहा।

''यहां आती रहिए, सब सीख जाएंगी।'' समवेत स्वर उठा। हड़बड़ी में नमस्ते करने का भी उन्हें ध्यान नहीं रहा था। अब ध्यान आया तो सबको हाथ जोड़ लिए। सबकी आंखों में मुस्कान फैल गई। पहली ही मुलाकात में महिलाओं ने उनसे पूछने न पूछने लायक सारी बातें पूछ लीं। पैरेंट्स,इनलॉज़,जेठ, देवर, सैलरी सभी की जिज्ञासा का शमन किया गया। मिसेज़ लाल सहज हो आई थीं और उसी सहजता से बल हासिल कर ,''पांच बरिस के बच्चे के फुल स्वेटर में केतनी ऊन लगेगी भाभी जी?'' पूछ लिया। उनका प्रश्न किसी एक के लिए नहीं था।

वहां उपस्थित सभी महिलाएँ अपनी-अपनी राय देने लगीं। ''बारह औंस ले आओ, बच जाएगी तो लौटा देना।'' अन्तिम और निर्णायक राय मिसेज़ मेहता की थी।

'' औंस का क्या मतलब कै गोला?''

''दुकानदार से कहना वह खुद दे देगा। पचास ग्राम का गोला हुआ तो छह और पचीस ग्राम का हुआ तो बारह गोला। यहीं लवली स्टोर पर मिल जाएगा, वैसे च्वॉयस तो ऋषिकेश में मिलेगी।''

''मतलब तरह-तरह की ऊन यहां नहीं, ऋषिकेश में मिलेगी।''

''ठीक है इनसे कह कर वहीं से मंगा लूंगी।''

''वह अकेले कलर पसन्द कर लेंगे?'' उपस्थित महिलाओं की आंखें आश्चर्य में फैल गईं।

'' हां काहें नहीं, घर भर का कपड़ा लत्ता वही खरीदते हैं। कपड़े खूब पहिचानते हैं ऊ। कम्प्यूटर से सामान मंगाते हैं।'' मिसेज़ लाल की आंखों में पति की प्रशंसा चमक रही थी।

मिसेज लाल के जाने के बाद उनकी खूब नकल उतारी जाने लगी।

'अब हम भी कम्प्यूटर से सामान मंगाएंगे'

''इसका हस्बैंड तो अच्छा पढ़ा लिखा है, यह तो एकदम एजूकेटेड नहीं मालूम होती ।''

"लक होना चाहिए, क्या पढ़ी क्या बेपढ़ी!" सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित हुआ।

मिसेज़ लाल घर लौटीं तो मुहल्ले की महिलाओं के पूरे असर में थीं। शाम को लाल साहब से उन्होंने उनसे उनके गुणों की, उनकी सरलता की खूब तारीफ़ की। "वहां कम ही जाया करो तो अच्छा है।" लाल साहब ने उन्हें सलाह दी।

"आप तो किसी पर भी भरोसा नहीं करते। सचमुच ये लोग बहुत अच्छी हैं।"

"चलो तुम्हें लगता है, तो यही सही वर्ना मैंने तो कुछ और ही सुना है। पूरी कालोनी में इस मुहल्ले की बैठकबाजी की चर्चा है। मुंह पर मीठा-मीठा बोलती हैं और पीठ पीछे एक दूसरे की बुराई करती हैं।"

"आप कानों सुनी बता रहे हैं मैं आँखों देखी बोल रही हूँ।"

"चलो भाई तुम्हीं सही हो।" लाल साहब ने हथियार डाल दिए।

अगले दिन जल्दी-जल्दी काम निबटा कर जब तक मिसेज़ लाल बैठक में पहुंचीं, तख्त पहले ही भर चुका था। उनके लिए ड्राइंगरूम से फोल्डिंग कुर्सी निकाल ली गई। ऊन सलाई हाथ में ले कर, "कै फ़न्दे डाल दूं?" उन्होंने मिसेज़ मिश्रा से पूछा। विचार विमर्श के बाद तय हुआ ऊन की मोटाई के हिसाब से सत्तर फन्दे काफी होगे। मिसेज़ मिश्रा ने ऊन सलाई उनसे ले लिया और फन्दे डाल कर एक दो सलाई उतार कर उन्हें पकड़ा दिया। बॉर्डर टाइट बुना जाना था। आदत न होने से मिसेज़ लाल से फन्दा बार-बार गिर जाता। वह जितना उसे ठीक करने की कोशिश करतीं, बुना हुआ फन्दा और उधड़ जाता।....वह सिर नीचे कर पूरी तन्मयता से फन्दा उठाने में लगी थीं, लेकिन वह काबू में नहीं आ रहा था। मिसेज़ मेहता, जिनकी आंखों में ऊन से एलर्जी है, उनको छोड़ कर सबके हाथों में बुनाई थी। वे आपस में बतियाती जा रही थीं और उनके हाथ यन्त्रवत् चल रहे थे। मिसेज़ लाल सबको देख कर कुंठा से भर उठीं, लेकिन मिसेज़ मेहता ने उनका हौसला बढ़ाया,"कोई बात नहीं पहले धीरे धीरे बुनोगी फिर अपने आप फ़ास्ट बुनने लगोगी।" और बात खतम करते ही उनके होठों पर कुटिल मुस्कान फैल गई।

मिसेज़ गर्ग ने मिसेज़ गुप्ता को चिकोटी काटी, जिसका मतलब था-देखी मिसेज़ मेहता की चालाकी! किस खूबी से उसकी सगी भी बन गईं और उसका बेवकूफ भी बना दिया।

एक बज गया। सभा तीन बजे तक के लिए विसर्जित हो गई। एक बजे पति लोग लंच के लिए आते हैं। दो बजे तक बच्चे स्कूल से आते हैं, उन्हें खिलाते-पिलाते तीन बज ही जाते हैं। दोपहर के बाद की सभा पांच बजे तक चलती है क्योंकि उसी समय पति लोग दफ्तर से आते हैं, महरिनें बरतन मांजने आती हैं और शाम की चाय का भी वही टाईम होता है।

जो महरिनें दूर से आती हैं, वे दोपहर को अपने घरों को नहीं जातीं। वे वहीं पार्क में लेट-बैठ कर टाईम पास करती हैं और दोपहर का खाना निबटते ही क्वार्टरों में बरतन मांजने पहुंच जाती हैं और दोनों बखत का काम निबटा कर ही अपने घरों को लौटती हैं, लेकिन जो नज़दीक से आती हैं वे सुबह का झाड़ू, पोछा, बरतन कर अपने घरों को लौट जाती हैं और फिर शाम के बरतन के लिए दुबारा आती हैं।

मिसेज़ लाल ने न किसी से काम वाली के लिए पूछा, न कोई कामवाली लगाई। मुहल्ले की औरतें परेशान हैं, बिना महरी लगाए उनका काम कैसे चलता है। अभी तक वह बैठक में नहीं पहुंची हैं, लिहाज़ा उनके बारे में बात करने का यह सबसे सही समय है।

"तुम्हें क्या लगता है स्वेटर कम्प्लीट कर लेगी?"

"मुझे तो लगता है, उसे उल्टा सीधा भी न जाने बुनना आता है कि नहीं?"

"किस्मत की धनी है, इतना अच्छा हस्बैंड मिला है।"

"चुप-चुप सामने।"

"आइए मिसेज़ लाल लेट कैसे हो गईं?"

" आप लोग तो बहुत जल्दी काम निबटा लेती हैं, हमारा तो काम ही नहीं निबटता।" मिसेज़ लाल हीनता ग्रंथि से ग्रस्त हो गईं।

"दिखाओ कितना बना स्वेटर?"

"कहां बना भाभी जी? घर में तो टाईम ही नहीं लगा। अरे आप का तो कंधा भी फूट गया।" मिसेज़ पुरोहित का स्वेटर उन्होंने हाथ में ले कर देखा।

इस बीच मिसेज़ गर्ग ने दूसरा प्रसंग छेड़ दिया था। अभी कल ही ये लोग मिसेज़ मदान की गुंझिया बनवा कर आई थीं, बात उसी सन्दर्भ में थी।

"मैंने जब गुंझिया ढकने के लिए पुरानी सूती चुन्नी या धोती मांगी, तो मेरे सामने गूदड़ का ढेर लगा दिया। तेल से चीकट कपड़े मुझे तो टच करने में भी घिन आ रही थी।"

"मैं तो पहली बार उनके घर गई थी। कितना सज संवर कर पर्स लटका कर घूमने निकलती हैं और घर देखा? इतनी मोटी डस्ट जमी थी सोफे पर।"मिसेज़ गर्ग ने अंगूठे को तर्जनी के पहले पोर से सटाते हुए कहा।

" और गिलास छिः छिः इतना चिकना कि मैंने तो प्यास अछइत पानी नहीं पिया।" बोल कर मिसेज़ गुप्ता पछता रही थीं। 'अछइत' शब्द उनके मुंह से अनायास निकल गया था। अब उन्हें याद आ रहा था, वह 'रहते' भी बोल सकती थीं। इतने सालों की मेहनत से उन्होंने अपने गंवईपन को एक दम धो डाला है। मुहल्ले में एक वही हैं, जिनके ब्लाउज का गला पीछे से दस इंच होता है तथा बाल ब्वॉय कट के हैं। लेकिन अभी भी मुंह से कोई-कोई ऐसा शब्द निकल जाता है कि सामने वाला उनसे पूछ बैठता है आप 'बिहार की हैं?' तब वह शर्म से पानी-पानी हो जाती हैं।

मिसेज़ लाल मिसेज मदान वाले प्रसंग से अनभिज्ञ थीं, अतः कुतूहल से उनकी बातें सुन रही थीं। मिसेज़ मेहता ने आंखों के इशारे से मिसेज़ गर्ग को यह प्रसंग आगे बढ़ाने से रोका। सामने से बीना चली आ रही थी। वह मिसेज़ मदान की मौसेरी बहन है। यहां की बात उन तक पहुचाते उसे देर नहीं लगेगी।

"आओ आओ बीना! मिसेज़ मदान

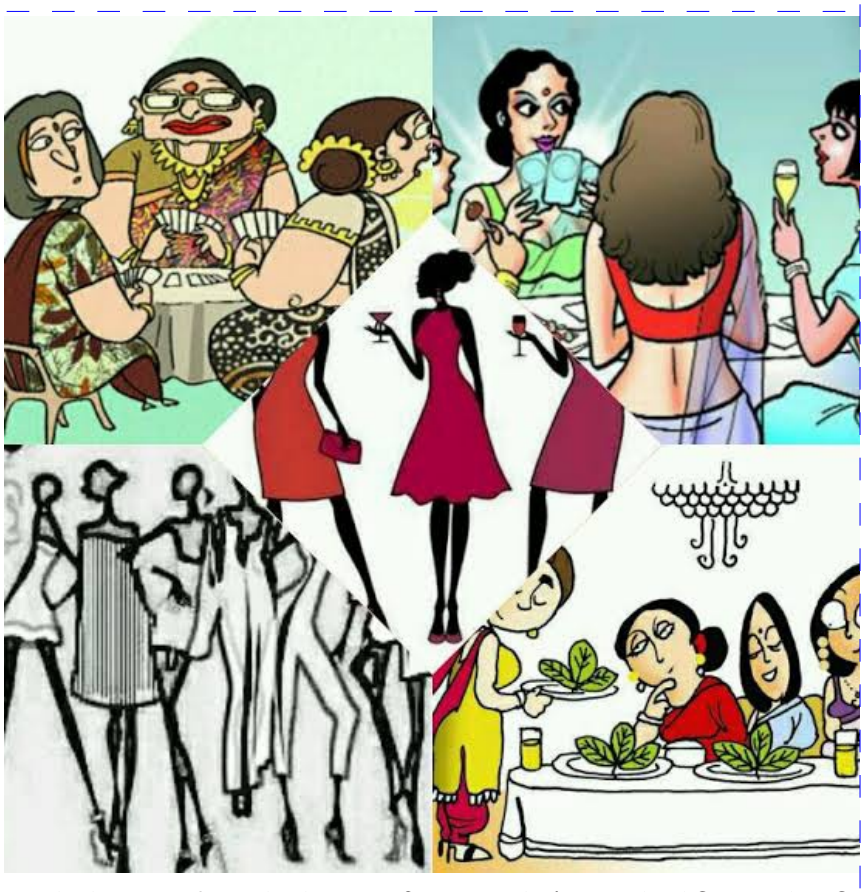

मुहल्ले से क्या गईं, तुमने तो आना ही बन्द कर दिया। अभी कहां आई थीं?"

"अरोड़ा जी से दवा लेने आई थी आंटी, बड़े की खांसी ही नहीं बन्द हो रही है। चलती हूं बच्चे ऊधम काट रहे होंगे।" उन्होंने गेट पर खड़े-खड़े ही थोड़ी बातें कीं और चलने लगीं।

"बीना यह कर के देखना, श्योर फायदा होगा।" चलती-चलती को भी मिसेज़ मिश्रा ने खांसी के दो एक घरेलू नुस्खे पकड़ा ही दिए।

उनके जाते ही, "करेगी यह? दोनों टाईम का खाना तो बना नहीं सकती, अदरक का जूस तो क्या ही निकालेगी?" मिसेज़ गर्ग ने बुरा सा मुंह बनाया। बीना शादी कर के गर्ग के पड़ोस में ऊपर के मकान में आई थी, उसके दोनों बच्चे उसी मकान में पैदा हुए थे, लेकिन उसके पति को अब डी टाईप का मकान मिल गया था, इसलिए वे लोग सी टाईप से चले गए थे।

"बड़ा चेंज़ आ गया इसके पहनावे में!" मिसेज़ मेहरा ने आँखें नचा कर कहा तो "तुम भी चली जाओ मिसेज़ मेहरा तुम्हें तो कितने सालों से डी टाईप मिला है।" मिसेज़ गर्ग ने कहा। मिसेज़ लाल चुप थीं। अभी सी टाईप-डी टाईप की ज्यादा समझ उनको नहीं है।

"भाभी जी आज आप लोग सात बजे हमारे घर आइएगा, आज राजू का सालगिरह है।" चलते-चलते मिसेज़ लाल ने कहा।

"तो बैठो अभी, चली जाना।"

"नहीं चलती हूं थोड़ी तइयारी भी करनी होगी।"

"गिफ्ट भी देखना पड़ेगा। पहले से पता रहता तो खरीद कर रख लेती। आज बर्थ डे है, आज बता रही है।" उनके जाने के बाद मिसेज़ मेहता ने बुरा सा मुंह बना कर कहा।

"सच में!" सबने मिसेज़ मेहता की हाँ में हाँ मिलाई।

राजू बहुत खुश था। हलवा का केक देख कर पहले तो वह बिदका, लेकिन जब मां ने कहा, इस बार पापा नहीं हैं, तो यही वाला काट लो। अगली बार बजार से असली वाला लाएंगे, तो वह मान गया। यह सुन कर कि शाम को आंटियां उसके घर आएंगी, वह अपनी बनाई ड्राइंग, स्कूल की कॉपी, उन्हें दिखाने के लिए इकट्ठी करने लगा था।

मुहल्ले की औरतें पहली बार उनके घर आ रही हैं, यह सोच कर मिसेज़ लाल काफ़ी उत्साहित थीं।

हंसने की आवाजें बाहर से ही आने लगी थीं। उनका स्वागत करने मिसेज़ लाल गेट पर ही चली गईं।

ड्राइंगरूम में घुसते ही सबकी आँखें अचरज में फैल गईं। मंहगा सोफा, मंहगे परदे, फर्श पर बढ़िया कालीन, शीशे की अलमारी में उम्दा क्राकरी एक-एक सामान ध्यान खींच रहा था।

केक पर नज़र गई तो सब चौंक पड़ीं, लेकिन मुंह से कुछ नहीं बोलीं। मिसेज़ लाल ने भांप लिया और सफाई देती सी बोलीं, "नकली जन्मदिन है भाभी जी। हर दस दिन पर जिद करता है, मेरा जनमदिन कर दो। कभी-कभी इसकी बात मान लेती हूं। इसके पापा एक महीने की ट्रेनिंग पर बाहर गए हैं, मैने कहा चलो इसी बहाने आप लोगों को अपना घर दिखा दूंगी और यह भी खुश हो जाएगा।"

"हम तो वैसे ही आ जाते घर देखने।" मिसेज़ मेहता को चिढ़ लगी। बेकार गिफ्ट के चक्कर में अपना टाईम खराब किया। मिसेज़ गर्ग हाथ में पकड़े लिफाफे को ले कर असमंजस में थीं, अब लिफाफा दें कि न दें। मिसेज़ पुरोहित और मिसेज़ मेहता एक दूसरे की ओर कनखियों से देखने लगी थीं।

केक ड्राइंग रूम में कटा, रंजू सबको लाँबी में नाश्ते की मेज पर बुलाने लगी। एक बार सबकी नज़र मेज पर ठिठक गई। नक्काशीदार पाए पर टिका कांच का टॉप, कुर्सियां भी अत्यन्त नफ़ीस। सबको मिसेज लाल की किस्मत से रश्क हुआ।

लीजिए न भाभी जी "समोसे आज पहिली बार बनाई हूं, न जाने कइसे बने हैं।" उन्होंने विनम्रता पूर्वक कहा हालांकि बनाने के बाद उन्होंने खुद चख लिया था और स्वाद ठीक ही था।

मिसेज़ गर्ग ने समोसे का एक टुकड़ा काटा। वह ठण्डी पूड़ी की तरह मुलायम हो गया था। उन्होंने बाकी समोसा जस का तस छोड़ दिया। देखा देखी सबने वही किया। सबने हलवा का केक भी बस नाम को ही लिया और दो-दो घूंट चाय पी कर उठ गईं।

"आप लोगों ने तो कुछ खाया ही नहीं, क्या हुआ अच्छा नहीं लगा?"

"नहीं, नहीं सब ठीक बना है, बाइ द वे खाने का मन नहीं है।"

मिसेज़ गर्ग तो रास्ते में ही खिल्ली उड़ाने लगीं,"जैसा नकली जन्मदिन, वैसा ही नकली नाश्ता।"

"लेकिन एक बात माननी पड़ेगी, उसके पति की पसन्द कितनी ऊंची है! हर सामान में टेस्ट झलकता है। क्या बढ़िया डाइंगरूम सजाया है। मुहल्ले में किसी के घर में इतना बड़ा टीवी नहीं है। बच्चों ने कपड़े भी कितने मंहगे पहने थे।"

"बस एक जगह मात खा गया बेचारा, बीवी तो उसके आगे कहीं ठहरती ही नहीं।"

" दबा के दहेज लिया होगा।"

अपने-अपने घरों को लौटती हुई सभी महिलाएँ अपने टीवी बदलने के बारे में सोच रही थीं।

मिसेज़ मेहरा को पूरी रात नींद भी न जाने आई कि नहीं, अगले ही दिन पति के साथ जा कर बयालीस इंच स्क्रीन वाला टीवी ले आईं।

अगले दिन की बैठक में बाकायदे मिसेज लाल का साक्षात्कार लिया गया। अपने गंवई संस्कार के चलते नाराज़ होने की बज़ाय वह खुश हुईं कि इतनी फैशनेबुल, पढ़ी-लिखी महिलाएँ उनके जीवन में इतनी रुचि ले रही हैं।

पहला सवाल "आप की शादी को कितने साल हो गए मिसेज़ लाल ?"

"भाभी जी बारह साल हो गए। तब इसके पापा दसवीं में थे।"

" मायके में आप कितने भाई बहन हैं?"

"हम इकलौती हूं भाभी जी। हमारे बाबूजी के पास बहुत जमीन जायदाद है। मां के दुलार में मैं नहीं पढ़ पाई।"

इकलौती सुनते ही मिसेज़ मेहरा

को अपने शक पर यकीन हो गया। जरूर जायदाद के लालच में लाल साहब के घर वाले अनपढ़ लड़की से शादी के लिए राजी हो गए होंगे।

''अच्छा आप के यहां इतनी छोटी एज़ में लड़के की शादी हो जाती है?''

''हमारे अजिया ससुर को जल्दी थी। वह हमेशा बीमार रहते थे इसी लिए अपने जीते जी पोते की शादी देख लेना चाहते थे।''

''अच्छा बाद में गौना हुआ होगा।''

''नहीं भाभी जी हम तो शादी के बाद ही बिदा हो कर ससुराल आ गई थी। इनके साथ तो बस साल भर से हूं। अब रंजू की क्लास बड़ी हो गई है, इसी लिए इनके साथ आ गई। बीच वाले दो अभी बाबा-आजी के पास ही हैं।''

मिसेज़ मेहता अचम्भे में पड़ गईं,''आज के जमाने में भी ऐसा होता है? हम तो एक दिन के लिए बच्चों को न छोड़ें किसी के पास, न ही कोई रक्खे।''

मीटिंग में मिसेज़ गर्ग नहीं आई थीं। मिसेज़ मेहता ने बताया कल उनके कुत्ते की अचानक डेथ हो गई ।

मिसेज़ लाल ने ध्यान दिया यहां औरतें बात-बात में अंग्रेजी के शब्द बोलती हैं। कोई-कोई बात तो उनके पल्ले भी नहीं पड़ती। सब शहरों से आई लगती हैं, किसी के रिश्तेदार बंगलोर रहते हैं, तो किसी के अमेरिका। उस दिन पुरोहित भाभी जी ने एक चाकलेट बच्चों के लिए दी, जो उनके भाई जर्मनी से लाए थे। मिसेज़ लाल को यह सोच कर मायूसी हुई कि उनका तो कोई रिश्तेदार शहर में भी नहीं रहता, अमेरिका तो बड़ी बात है। अभी पहले पहल उनके पति गांव से बाहर निकले हैं, वरना सब खेती बाड़ी करते हैं या ज्यादा से ज्यादा पास के प्राइमरी स्कूल में पढ़ाते हैं।

''कल गर्ग भाभी जी के कुत्ते का डेट हो गया।'' उन्होंने घर आ कर लाल साहब को बताया।

''क्या हो गया?''

''डेट हो गया''

''फिर बताओ।''

''अरे गर्ग भाभी जी का कुत्ता मर गया।''

''हां अब ठीक है, तुम उनकी देखादेखी अंग्रेजी बोलने की कोशिश मत करना। तुम जैसी हो वैसी ही ठीक हो।''

मिसेज़ लाल पति पर सौ सौ जान निछावर हो गईं।''सुनिए जी क्या सचमुच आप की इच्छा नहीं होती, कि हम भी यहां की औरतों की तरह बन संवर कर रहूं और बात के बीच-बीच में अंग्रेजी बोलूं? मेरा तो बड़ा मन करता है अंग्रेजी सीखने का।''

''तो सीख लो अंग्रेजी, अभी राजू की किताब पढ़ा करो, फिर रंजू की पढ़ना, लेकिन इन लोगों से भरसक दूर ही रहना।''

मिसेज़ लाल को समझ नहीं आता पति को मुहल्ले के लोगों से क्या परेशानी है? ठीक है आप पुलिस में हैं, लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि बाकी सब लोग चोर हैं।आज रविवार है, मुहल्ले के अधिकतर आदमी घर में हैं। जो शिफ्ट की ड्यूटी करते हैं और जिनका साप्ताहिक अवकाश किसी और दिन पड़ता है, वही ड्यूटी पर गए हैं। लाल साहब को अचानक कोई काम पड़ गया और वे सुबह-सुबह घर से निकल गए।

मिसेज़ लाल रसोई में नाश्ता बना रही हैं। दूर से नारों की आवाज सुनाई दे रही है। उन्होंने कान उधर ही रोप दिए। उनका दिल ज़ोरों से धड़कने लगा । सड़क पर नारे लगाता जुलूस मुहल्ले की ओर आती सड़क पर मुड़ गया है। भीड़ लाल साहब के घर की ओर मुड़ गई। मुहल्ले के कई लोग अपनी खिड़कियों से यह दृश्य देख रहे हैं, किन्तु कोई बाहर नहीं आता। आवाज़ साफ सुनाई देने लगी है,''एन. बी. लाल हाय! हाय!'' कुछ लोगों ने उनका गेट खोल दिया है। भीड़ अहाते में जमा हो गई है,''एन. बी. लाल बाहर आओ!'' कई लोग दरवाजा भड़भड़ा रहे हैं। राजू और रंजू सहम कर मां से चिपट गए हैं। ''दरवाजा खोलो हम तुम्हें कुछ नहीं कहेंगे ।'' किसी भारी भरकम आवाज़ वाले ने कहा।

मिसेज़ लाल असहाय हो कर खिड़की से झांकने लगीं, लेकिन मुहल्ले का कोई आदमी नज़र नहीं आया। जब उन्हें लगा कि दरवाजा टूट जाएगा तो उन्होंने अपने आप ही दरवाजा खोल दिया। दरवाजा खुलते ही एक उनतीस तीस साल का युवक आगे बढ़ आया और घर में घुस गया।

''कहाँ छिपे हो एन. बी. लाल? बाहर निकलो।''

डर के मारे बच्चे मां से चिपट गए थे और मिसेज़ लाल एक कोने में खड़ी काँप रही थीं।

बदहवास युवक तीनों कमरों में

ढूँढ़ने के बाद,''चलो साथियो अपमान का बदला तो लेना ही है, आज नहीं फिर कभी। '' कह कर वापस मुड़ गया। दुख, अपमान और बेबसी में मिसेज़ लाल की आंखों से झर-झर आंसू गिरने लगे।

भीड़ के वापस चले जाने पर मिसेज़ मिश्रा झट नीचे उतरीं। ''क्या हुआ मिसेज़ लाल? ये कौन थे?''

''मैं क्या जानूँ भाभी जी न मालूम इसके पापा से क्या अदावत है इन लोगों की?'' ''मम्मी सारे लोग गुप्ता अंकल के यहां जमा हैं।'' रंजू की आँखों में अभी तक डर समाया था।

''समझ गई मैं, मिसेज़ गुप्ता का भाई मनोज अग्रवाल मजदूर यूनियन का नेता है। आए दिन गेट पर सिक्योरिटी वालों से उसकी झड़प होती रहती है। उसी ने कुछ फसाद खड़ा किया होगा।''

लेकिन गुप्ता भाभी जी ने तो कभी कुछ नहीं बताया। मिसेज़ लाल हैरान थीं।

''मिसेज़ गुप्ता को तुम नहीं समझोगी बड़ी ऊँची चीज़ हैं। तुम्हारे सामने कितना मीठा बोलती हैं और पीछे तुम्हारी खूब खिल्ली उड़ाती हैं। कहती हैं न जाने किस लोभ में लाल ने शादी कर ली इसे तो ढंग से बोलना भी नहीं आता।..... अच्छा कहना मत लाल साहब से।''

मिसेज़ मिश्रा चली गईं लेकिन मिसेज़ लाल के मन में तूफान उठा गई थीं। उस दिन के बाद वह मीटिंग में नहीं गईं। ''लाल साहब ने अपना ट्रांसफ़र करा लिया।'' महिलाओं ने सुना तो मायूस हो गईं।....अच्छी थी बेचारी! मिसेज़ गुप्ता, मिसेज़ गर्ग के मुंह से एक साथ निकला। ■■

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

पाठकों से निवेदन.

प्रिय पाठक बन्धु,

सच की दस्तक मासिक पत्रिका आप की अपनी पत्रिका है। हिन्दी साहित्य और भाषा के विकास के लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। पत्रिका निरन्तर आप के घर पहुँचती रहे इसलिए निम्न फार्म भरकर शीघ्र भेजने की कृपा करें या हमारे प्रतिनिधि से सम्पर्क करें।

श्री/श्रीमती /कुमारी.....
पता.....
.....
.पिन कोड..... मोबाइल संख्या.....
ईमेल.....

वार्षिक सदस्यता	-	300/- रुपए मात्र।
पंचवर्षीय सदस्यता	-	1200/- रुपए मात्र।

पाठक अपनी सदस्यता राशि निम्न खाते में जमा कर सकते हैं और जमा करने के बाद मोबाइल पर अवश्य सूचित कर देंगे।

Sach Ki Dastak
ब्रजेश कुमार
A/c. No. : 13751652000024
सम्पादक, सच की दस्तक
IFSC Code : PUNB0137510
Punjab National Bank

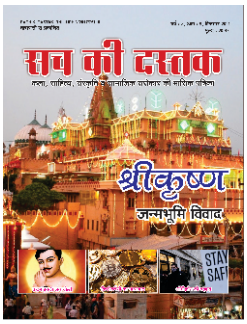

पता : 1215/A सुभाष नगर, दीनदयाल उपाध्याय नगर, चन्दौली
पिन कोड - 232101, मोबाइल नम्बर - 9621503924

' छन्द-छन्द मकरन्द ' (मुक्तक संग्रह)

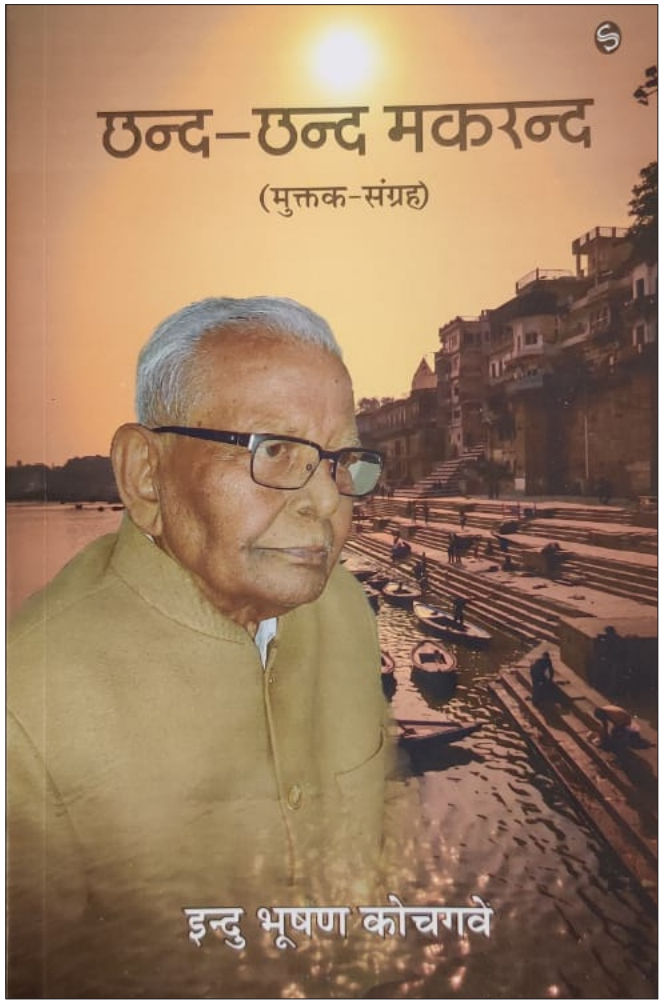

अलका अग्रवाल

परम आदरणीय श्री इन्दुभूषण कोचगवे सर ने जीवन के सत्तरहवें बसंत के पश्चात् अपनी लेखनी की जो पूजा की व उस पूजा ने उन्हें जो माँ शारदे के शुभ आशीर्वाद से जिस प्रकार से अभिभूत किया वो काबिले तारीफ है। आप एक विनम्र, विवेकशील शिक्षक, प्रधानाचार्य व समाजसेवी रहे हैं। आप यद्यपि विज्ञान के अध्यापक थे फिर भी हिंदी से अत्यधिक प्रेम ने हिंदी के दोहे, मुक्तक आदि लिखने के लिए आपको प्रेरित किया।

'छन्द-छन्द मकरन्द', जो कि मुक्तक संग्रह है आपकी दूसरी पुस्तक है। आपकी इस पुस्तक का प्रकाशन - 'समय साक्ष्य', देहरादून ने किया है। इस पुस्तक का आवरण चित्र आपके पुत्र रोहित कोचगवे जी ने बनाया है जिसमें बनारस के घाट के साथ परम आदरणीय श्री इन्दुभूषण कोचगवे जी का चित्र भी अंकित है। यह पुस्तक 98 पृष्ठों की है। जिस प्रकार मधुमक्खी फूलों का मकरन्द एकत्रित कर मधु बनाती है उसी प्रकार

आपने छंदों को कथ्य और शिल्प में कसकर मुक्तक छंदों का मकरन्द तैयार किया है जो पाठक के हृदय को मिठास से भर देता है।आपका प्रत्येक मुक्तक पढ़ने से प्रतीत होता है कि आपने मुक्तकों की गहन जानकारी प्राप्त की है।आपकी भाषा इतनी सीधी व माधुर्य से भरी हुई है कि पाठक मंत्र मुग्ध होकर उनको पढ़ता जाता है। आप अपनी बात को चार पंक्तियों वाले मुक्तक में सरलता से व पूर्णता से कह जाते हैं।

सर्वप्रथम आप माँ सरस्वती की वंदना 'विधाता छन्द' में कहते हैं जो 28 मात्राओं का छंद है-

'सजाकर स्नेह शब्दों में, सभी उद्गार लाया हूँ।
खिले जो फूल श्रद्धा में, वहीं उपहार लाया हूँ।
चढ़ाकर भावना अपनी, करूँ मैं अर्चना तेरी।
चरण रज दान दे दो माँ, शरण में आज आया हूँ।'

श्रीकृष्ण जी की वंदना करते हुए आपका मुक्तक कितनी सच्चाई, सरलता, मधुरता व गहनता लिए हुए प्रतीत होता है। इसका रसास्वादन करते हुए पाठक नत मस्तक हो उसी में खो जाता है-

'दिखाकर दिव्य रूपों को, सिखाया धर्म पर चलना।
बताया कर्मयोगी ने, सदा ही कर्म ही करना।
नहीं है शब्द में सामर्थ्य, करूँ क्या आपका वर्णन।
दिया जो ज्ञान गीता में, वहीं बस मार्ग है अपना।'

आपके सभी मुक्तक छंद हिंदी की खड़ी बोली में रचे गए हैं।आपके हर मुक्तक में माधुर्य के साथ-साथ गेयता भी है। विधाता छन्द जो 28 मात्राओं का है, उसमें आपने 'माता-पिता', 'गॉव', 'मौसम', 'बचपन', 'प्यार', 'नया भारत', 'दिव्यांगता' तथा 'शहीदों की याद में' सफलता पूर्वक कलम चलाई है। इसके अतिरिक्त आपने अरुण, भुजंगप्रयात, तूणक, रुचिका आदि मुक्तक छंदों में भी मुक्तक लिखे हैं। 'प्रभात' के विषय में पंचमाचर मुक्तक छंद में लिखते हुए जो 24 मात्राओं का है, आप अपने उद्गार कुछ इस प्रकार प्रकट करते हैं-

'रही नहीं निशा वहाँ, जहाँ प्रभा समा गई।
सभी जड़ें, सभी बढ़ें, नयी विभा बुला रही।
सभी मिलें, जुटें सभी, सशक्त भावना यही।
चलें सभी सुपंथ में, नयी विधा सिखा रही।'

आपने पंचमाचर मुक्तक छन्द में 'प्रभात', 'आह्वान', 'पिता' तथा ' निशा निमंत्रण' जैसे विषयों पर सफलतापूर्वक बखूबी कलम चलाई है। माता-पिता के प्रति आपके उद्गार कितने पवित्र व पूजनीय हैं, जिसे पढ़कर पाठक स्वयं महसूस कर सकता है-

'सदैव माँ दयामयी, ममत्व में प्रधान है।
कठोर, शौर्य, धैर्य से, पिता बना महान है।
यही सजीव ईश है, जिन्हें धरा सँवारती।
सजी असंख्य रश्मियाँ, बनी पवित्र आरती।'

अरुण व भुजंगप्रयात मुक्तक छंद जो 20 मात्रा के हैं, उनमें भी आपने गेय पदों की रचना की। इसके अलावा आपने तूणक वह रुचिका मुक्तक छंदों में भी अपना हाथ आजमाया है। जैसा कि सर्वविदित है आप दिव्यांगों की सेवा में प्राणपण से लगे हुए हैं। यही कारण है कि उनकी पीड़ा से द्रवित हो दिव्यांगता के लिए आप अपने उद्गार कुछ यूँ प्रकट करते हैं-

' नयन तो खो दिया मैंने, श्रवण से सुन नहीं सकता।
व्यथा तो हो रही लेकिन, जुबाँ से कह नहीं सकता।
बचा बस स्पर्श ही केवल, अगर मस्तिष्क है साथी।
इन्हीं के साथ चलता हूँ, मगर मैं थक नहीं सकता।'

आपके चिंतन ने मुक्तक छन्दों में बहुत विस्तार पाया है।आपने 'बचपन' से लेकर 'बुढ़ापे' तक 'ईश वंदना' से लेकर 'माता-पिता की वंदना' तथा अन्य विभिन्न क्षेत्रों में सफलतापूर्वक अपनी कलम चलाई है तथा पाठक के मन को छूने में सफलता प्राप्त की है।

■■

श्रीलंका की लंका ऐसे लगी

यदि हम सब अपनी-अपनी कट्टरता को तानते रहे- तानते रहे तो कट्टरता खुद नहीं टूटेगी अपितु देश की एकता और आत्मा को जरूर विखंडित कर देगी।

आकांक्षा सक्सेना
न्यूज ऐडीटर सच की दस्तक

भारत को श्रीलंका से सबक लेना चाहिए कि हम वो गल्ती न करें जो लंका में हुई। श्रीलंका की लंका लगी कर्ज से और राजनीतिक बदनीति से वहीं भारत को समझना होगा कि भारत में विभिन्न जाति - धर्म- मजहब विभिन्न संस्कृतियां, विभिन्न संस्कार, विभिन्न बोलियां और विभिन्न त्यौहार यहां तक की विभिन्न मौसम । कुल मिलाकर रंग-बिरंगे खूबसूरत सुगंधित फूलों का बगीचा जिसमें प्रत्येक भारतीय बेहतरीन है वो भी अपनी कुशल प्रतिभा के धनी हैं। भारत अपनी इसी अद्भुत विभिन्नता में एकता के लिए सम्पूर्ण विश्व में ख्याति प्राप्त है। आप सोच रहे हैं होगें कि यह बात तो सबको पता है इसमें नया क्या है? सच कहूँ तो बहुत कुछ 'नया' अब घटने लगा है। जोकि भारत की एकता की मजबूत नींव में दीमक लगने जैसा होगा। यह जो आजकल पूरे देश में हिन्दू-मुसलमान हो रहा है, सिर तन से जुदा होने के लिए पाकिस्तान और बांग्लादेश से घुसपैठिया आकर यहां के हिन्दुओं को मार रहे हैं और कुछ तो यहीं के ही हैं जोकि पहले गहरे दोस्त हुआ करते थे और अचानक कट्टरपंथियों के बहकावे में आकर दोस्त से दुश्मन बन गये। मुझे लगता है कि देश का कोई मुसलमान इस कत्लेआम की वकालत नहीं करता और न हि इसे सही मानता है। तो फिर ये कौन लोग हैं जो दो भाइयों में दरार पैदा करना चाहते हैं। मैं बिल्कुल स्पष्ट कहना चाहती हूं कि चाहे कोई हिन्दू भाई - बहन की लिचिंग हो या हत्या हो या फिर किसी

मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी भाई-बहन की लिचिंग हो या हत्या हो। यह बिल्कुल भी बर्दाश्त के बाहर है। फिर अगर यह राजनीतिक तथाकथित कुछ घटिया नेताओं का अपना चुनावी फायदे वास्ते षड्यंत्र है तो यह और भी देश के लिए घातक है।अब समय आ गया कि देश के न्याय तंत्र को बेहद कठोर होना होगा वरना हमारे देश रूपी बगीचे को हिन्दू-मुसलमान विद्रोह वाली सस्ती राजनीति की नफरती आग में खाक होने से कोई बचा नहीं सकेगा। यह जो साम्प्रदायिक नफरतों के न्यूक्लीयर बम हैं ना यह हाइड्रोजन बम से भी घातक सिद्ध होगें। जिसमें समस्त संस्कृतियों का अनंत काल तक के लिए विध्वंस हो जायेगा और जो नयी पीढ़ी आयेगी वो फिर कभी किसी मूल्य पर मूलरूप से एक नहीं हो सकेगी। यह वैज्ञानिक पहलू भी है कि एकता में ही शक्ति है। जब-जब हम बँटेगें तब - तब चीन, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि हष्ट-पुष्ट होगें। हमें आपसी प्रेम और सद्भाव की शुरूआत, अपने-अपने घरों से ही करनी होगी कि गली मोहल्ले से जब भगवान की पालकी-शोभायात्रा-कांवड़-ताजिया, मोहर्रम जुलूस, सिक्ख गुरूओं की शोभायात्रा , बौद्ध, जैन आदि किसी भी धर्म के लोगों से जुड़ी शोभायात्रा, कलश यात्रा आदि धार्मिक लोग गुजरें तो हम

अपने-अपने बच्चों को बतायें कि यह हमारे हिन्दू-मुस्लिम, सिक्ख, बौद्ध, जैन, पारसियों का फलां त्योहार है और इस त्योहार का यह मतलब है। और हम सबको एक दूसरे का किस तरह सम्मान करना है। इससे बच्चों के मन में सभी के प्रति सम्मान भाव जन्म लेगा और उसका सामान्य ज्ञान भी अच्छा होगा तथा भविष्य में हमारे देश की नींव प्रेम से परिपूर्ण जबर्दस्त मजबूत होगी। कट्टरपंथियों को यह बात समझनी होगी कि देश के विकास में सबका बराबर का योगदान रहा है। सभी देशवासियों ने मिलकर इस बगीचे को सँवारा है। देश सबका है और देश को बचाना, देशवासियों की प्राणों की रक्षा हम सबका नैतिक कर्तव्य और दायित्व है। कि हमारे किसी भी धर्म - जाति, मत मजहब के भाई - बहन के साथ कभी बुरा नहीं होना चाहिए और हमारा धर्म, कर्म और देश, कभी भी अन्य मुल्कों में बदनाम नहीं होना चाहिए। ये होनी चाहिए हम सबकी ईमानदारी भरी जिम्मेदारी। जिसमें राजनैतिक समाज और सुप्रीम कोर्ट की महती भूमिका की आवश्यकता है। और सबकी जवाबदेही सुनिश्चित होनी चाहिए।

यदि हम सब अपनी-अपनी कट्टरता को तानते रहे- तानते रहे तो कट्टरता खुद नहीं टूटेगी अपितु देश की एकता और आत्मा को जरूर विखंडित कर देगी। फिर वैचारिक कट्टरता से उपजी हिंसा से मानवता के घोर पतन यानि पोर-पोर, कोण-कोण लंका लगने से कोई नहीं बचा सकता।हाल ही में हम सबने अफगानिस्तान का हाल देखा कि तालीबानी आतंकियों ने कैसे एक पूरे मुल्क पर कब्ज़ा कर लिया और आज वहां के निवासियों को सुई के छेद से होकर गुजरना पड़ता यानि वह मुल्कवासी अनंत काल के लिए गुलामी भोगने को तैयार है सिर्फ़ देश के कुछ गद्दारों, कट्टरपंथी विचारधारा और बदनीति और भ्रष्टाचार में डूबी राजनीति के कारण, वरना लंका, लगना भी इतना तो सरल नहीं और कभी-कभी कठिन भी नहीं। चलिये मानसिक तौर पर लंका का जायजा लिया जाये कि कभी लंका विदेशी पर्यटकों का पसंदीदा देश हुआ करता था। पर कोरोना काल में मंदी की मार से लंका की लंका लगने की शुरूआत हुई और पूरा देश दीवालिया होने की कगार पर पहुंच गया। रही आज की स्थिति तो हालात इतने डरावने हैं कि श्रीलंका में आम जनमानस के रोजमर्रा के उपभोग की वस्तुओं की भी किल्लत होने

के चलते कालाबाजारी व महंगाई अपने चरम पर है।

विडम्बना देखो! कि श्रीलंका के वर्ष 2020 के मानव विकास सूचकांक यानी ह्यूमन डेवलपमेंट इंडेक्स के आंकड़ों में जहां भारत दुनिया में 0.645 अंक के साथ 131वें स्थान पर था, वहीं इस सूची में श्रीलंका 0.782 अंक के साथ 72वें स्थान पर था। यानी की दुनिया के 189 देशों की सूची में श्रीलंका भारत से बहुत ऊपर था। यहां आपको बता दें कि मानव विकास सूचकांक मानव विकास के 3 मूल मानदंडों यानी जीवन प्रत्याशा, शिक्षा और प्रति व्यक्ति आय में देशों की औसत उपलब्धि को मापता है। इसके आंकड़ों को देखा जाये तो वर्ष 2020 में श्रीलंका की प्रति व्यक्ति आय भी भारत से कहीं बहुत ज्यादा थी। विचारणीय तथ्य यह है कि ऐसी मजबूत स्थिति होने के बाद भी दो वर्षों में ही श्रीलंका में ऐसा क्या हुआ। इस पर देश-दुनिया के विशेषज्ञों के विचारों को देखें तो उन विचारों का मूल सार यह है कि श्रीलंका अपनी पतन फिल्म का स्वंय ही डायरेक्ट और लेखक है।दुनिया की माने तो श्रीलंका सरकार का लचर सिस्टम, वैचारिक कट्टरता, जनता के विचारों से दूरी, देश में बढ़ती बेरोजगारी, पैंशन बदहाली, साम्प्रदायिक उन्माद, सत्तासीनों के लिए प्रभावी स्वार्थी नीतियों के तथाकथित गद्दारों द्वारा, घोटाले, भ्रष्टाचार, परिवारवाद, सीमा से अधिक सम्पत्ति का गबन, अदूरदर्शिता के चलते जबर्दस्त आर्थिक संकट और चीन से लिये कर्ज को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है।श्रीलंका के इस बेहद चिंताजनक हालात के लिए राष्ट्रपति गोटबाया

राजपक्षे और उनके भाई पूर्व राष्ट्रपति महिंदा राजपक्षे को जिम्मेदार माना जा रहा है, क्योंकि चंद दिनों पहले तक भी राजपक्षे बंधुओं व सत्ता का आनंद ले रहे उनके परिजनों से पक्ष, विपक्ष व सिस्टम के लोगों में से कोई भी प्रश्न या सरोकार नहीं रखता था। जिसके चलते लंबे समय से श्रीलंका के शासन व प्रशासन में ऊपर से नीचे तक पूरे तंत्र में देश व समाज के हित की जगह एक परिवार के प्रति गुलामी व्याप्त हो गयी थी और सिस्टम /मीडिया/बुद्धिजीवी वर्ग आदि ने सही व गलत निर्णय पर अपने विचार ना देकर के केवल राजपक्षे बंधुओं की हां - हां मिलाना जारी रखा। जिसकी वजह से शासक निरंकुश बेलगाम होते चले गये और राजनीतिक स्तर पर भ्रष्टाचार अपने चरम पर पहुंच गया था।

आज श्रीलंका दुनिया में एक उदाहरण बन गया है कि कैसे वहां के राजनीतिक लोगों, उनके परिजनों, ब्यूरोक्रेसी व सिस्टम में बैठे चंद लोगों ने भ्रष्टाचार के दम पर देश की मजबूत जड़ों को अपने ही हाथों से नोच डाला। अब श्रीलंका के सिस्टम के सामने लोगों का पेट भरने की समस्या के साथ-साथ देश में विभिन्न प्रकार की सामाजिक, आर्थिक और शासन-प्रशासन महिला सुरक्षा, स्वास्थ्य संबंधी गंभीर चुनौतियां सुरसा की तरह मुँह फाँड़ें खड़ी हैं, जिसके फलस्वरूप श्रीलंका में बहुत बड़े स्तर पर युवा जन विद्रोह हो गया है। कुछ युवा आंदोलन कारी वहां के राष्ट्रपति भवन में घुस कर मंहगे गद्दों पर कूदते दिखे थे।

सच तो यह है कि श्रीलंका के युवा वहां के गद्दे पर नहीं बल्कि वहां के भ्रष्ट शासन के सीने पर कूद रहे थे। भई! कूदे भी क्यों नहीं क्योंकि श्रीलंकाई सरकार की विभिन्न ग़लत नीतियों के चलते ही देश पर 51 बिलियन डॉलर का बहुत भारी-भरकम कर्ज हो गया है। हालात यह हो गये हैं कि श्रीलंका की सरकार इसका ब्याज तक भी चुकाने में पूर्णतः नाकाम है। बता दें कि श्रीलंका के राजनायिकों ने अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने की जगह बड़े स्तर पर अपनी तिजोरी भरने

की महत्वाकांक्षा पर काम किया। वहीं सत्ता पाने के लालच में वर्ष 2019 में अपनी फ्री स्कीम के चलते टैक्स की दरों में 15 फीसदी की भारी कटौती कर दी, जिसके चलते अचानक से ही श्रीलंका सरकार की प्रति वर्ष आय में लगभग 60 हजार करोड़ रुपये का भारी भरकम कटौती दर्ज की गई । यह सब जानकर-देखकर भी यानि लंका की लंका लगते देखकर भी श्रीलंका सरकार अपने कम्फर्ट जोन में मस्त रही और जनता के प्रति संवेदनहीन रही। परिणामस्वरूप लंका की लंका लग गयी। वहीं, मासूम जनता बिन अपराध के सजा भुगतने को विवश रही।

आज श्रीलंका में एक तरफ तो खाद्यान्न वस्तुओं की जबरदस्त महंगाई ने वहां के सभी लोगों की कमर तोड़कर रख दी है, वहीं दूसरी तरफ देश की बेहद खस्ताहाल आर्थिक स्थिति के लेखा-जोखा ने श्रीलंका व दुनिया के अर्थशास्त्रियों व उसके सभी मददगार देशों की चिंता बढ़ा दी है। श्रीलंका में आलम यह हो गया है कि ईंधन, गैसोलीन व खाद्यान्नों आदि की कमी की वजह से लोगों को दो वक्त की रोटी खाने के भी अब तो लाले पड़ गये हैं। हालांकि वैसे देखा जाये तो श्रीलंका को एक उष्णकटिबंधीय देश होने के चलते खाद्यान्न की वस्तुओं के लिए कभी भी बहुत ज्यादा दूसरे देशों पर निर्भर नहीं होना चाहिए था, लेकिन वहां की बदनीति व्यवस्था ने कभी इस पर विचार ही नहीं किया।देश को बर्बाद करने में राजपक्षे सरकार पर दुनिया में पहला पूर्ण रूप से 100 फीसदी जैविक खेती करने वाला देश श्रीलंका को बनाने की बिना पूर्व तैयारी की महत्वाकांक्षा ने प्रतिकूल परिणाम दिया। उन्होंने वर्ष 2021 में अपने जैविक खेती के सपने को पूरा करने के लिए रासायनिक उर्वरकों के देश में आयात करने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिए। जबकि जिस देश की 90 फीसदी से अधिक खेती पूर्णतः रासायनिक उर्वरकों पर निर्भर हो वहां पर बिना किसी चरणबद्ध तरीके के रासायनिक उर्वरकों पर अचानक से ही प्रतिबंध लगा देना थोड़ा जल्दबाजी भरा कदम साबित हुआ। क्योंकि देश में अचानक ही जैविक खेती पर जोर दिए जाने से आगामी तीन-चार वर्षों में फसलों की उपज की मात्रा में भारी कमी आना तय होता है। श्रीलंका के हठधर्मी हुक्मरानों के इस निर्णय से श्रीलंका व दुनिया के अन्य देशों के अर्थशास्त्री भी अचंभित थे। इसका सीधा असर तत्काल ही खाद्यान्न की वस्तुओं के उत्पादन पर जबरदस्त रूप से पड़ने लग गया था।

वहीं यूक्रेन व रूस का युद्ध शुरू होने के चलते दुनिया में वैसे ही ईंधन व खाद्यान्न की सभी वस्तुओं के मूल्यों में अचानक भारी बढ़ोत्तरी हुई, जिसके चलते पेट भरने के लिए जरूरी वस्तुओं की कीमतें पूरी दुनिया में चंद दिनों में ही 60 फीसदी तक मंहगी होकर अंतरिक्ष नाप गयीं। तब श्रीलंकाईयों को ईंधन, दूध, चावल आदि तक भी बहुत महंगी दरों पर मिलने लगा।

श्रीलंकाई सरकार के एक ग़लत निर्णय के चलते वहां पर अचानक ही स्थिति ऐसी बन गयी कि देश के आयात व निर्यात के संतुलन के बीच एक बहुत बड़ा फासला बन गया, जिसके कारण से सरकार के पास विदेशी मुद्रा का कोष बहुत तेजी के साथ खत्म होने लगा। उसका अंतिम परिणाम यह हुआ कि आज श्रीलंका के नागरिक अनेकों असुविधाओं के चलते भूखों मरने के लिए मजबूर हो गये। अब संयुक्त राष्ट्र संघ के वर्ल्ड फूड प्रोग्राम के आंकड़े यह दर्शा रहे हैं कि 10 में 9 श्रीलंकाई परिवार एक समय का भोजन त्याग कर अपना व अपने परिजनों को पालने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। जिसकी वजह से श्रीलंका में आजकल अराजकता की ऐसी भयावह स्थिति हो गयी है कि राष्ट्रपति भवन पर श्रीलंका की आम

जनता का पूर्णतः कब्जा हो गया है। राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे देश छोड़कर भागने में सफल हो गये हैं, वह मालदीव में कहीं सुरक्षित जगह पर छिप गये हैं। वहीं फिलहाल श्रीलंका के पास 25 मिलियन डॉलर मात्र का विदेशी मुद्रा भंडार बचा है, जो कि रोजमर्रा की जरूरतमंद वस्तुओं के आयात के लिए ऊंठ ते मुंह में जीरे के समान है, जिसकी वजह से श्रीलंका ईंधन, दवाई, खाद्यान्न आदि जैसी रोजमर्रा की जरूरत की तमाम वस्तुओं का भी अब आयात-निर्यात करने की स्थिति में नहीं है। देश में पेट्रोल-डीजल की कीमतें आसमान छू रही हैं, ईंधन का स्टॉक पूरी तरह से खत्म होने की कगार पर है। हालत यह है कि , जरूरी समय के लिए बिजली और फ्यूल को बचाने के लिए अब स्कूल और अनेकों ऑफिस तक को बंद कराया जा रहा है।

अब इस बेहद संवेदनशील आर्थिक परिस्थिति के कारण श्रीलंका की मुद्रा का 80 फीसदी तक अवमूल्यन हो चुका है, एक अमेरिकी डॉलर अब लगभग 360.65 श्रीलंकाई रुपए तक का हो गया है। बता दें कि 2009 तक दशकों लंबे चले गृहयुद्ध को झेल चुका श्रीलंका अब पुनः गृहयुद्ध के तीखे नाखूनों पर खड़ा होकर अपने

अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्षरत है।

अब कुछ लोग सोच रहे होगें कि श्रीलंका की इस हालत में तो भारत को श्रीलंका को गोद ले लेना चाहिए या अपना आधिपत्य जमा लेना चाहिए तो धार्मिक एंगल यह है कि जब भगवान श्री राम ने रावण वध के बाद श्रीलंका पर अपना आधिपत्य नहीं जमाया, उसे रावण के भाई विभीषण को ही सौंप दिया तो भारत की संस्कृति के प्रतिनिधि हमारे देश के प्रधानमंत्री मोदी जी, कैसे श्रीलंका को ऐसी स्थिति में बदनीयती से कब्ज़ा करने की सोच सकते हैं बस यही तो फर्क़ है तालिबानी और हिन्दुस्तानी में, भारतीय संस्कृति मदद की परिचायक है हड़प की नहीं। और जितना हो पा रहा है भारत सरकार अपनी कुशल विदेश नीति के तहत यथासंभव लंकावासियों की मदद करने में संकल्पित हैं।

हालांकि दुनिया के अर्थशास्त्रियों को श्रीलंका के पुनः अपने पैरों पर खडे होने की पूरी उम्मीद है, क्योंकि श्रीलंका के हिस्से में दुनिया का एक बहुत ही व्यस्त समुद्री मार्ग आता है, जोकि भविष्य में उसकी अर्थव्यवस्था में ऑक्सीजन का काम कर सकता है।पर तब जब लंका में अखंड देशभक्त पवित्र हृदय वाला दूरदर्शी, ईमानदार, काबिल नेता सेवा की भावना से आकार ले और विराजे, तब ही लंका लगी लंका को उबारा जा सकेगा। फिलहाल हम सब 15 अगस्त 2022 को स्वतंत्रता के 75 साल पूरे करके 76 वां स्वतंत्रता दिवस का अमृत महोत्सव मना रहे हैं जिस पर सच की दस्तक के माध्यम से हम यही कहेगें कि मथों अपने मन को करो मंथन और स्वंय ही निकाल फेंको सम्पूर्ण वैमनस्यता के विष को कि तुम भी परमात्मा के पुत्र हो, बहा डालों अमृत की गंगा और करो देश और विश्व का उत्थान कि तुम्हीं हो वो जिसे कहते 'भारत' 'भारतवर्ष' । जय हिंद वंदेमातरम्।

गिफ्ट सिटी परिकल्पना

साथियों! निसंदेह भारत के प्रधानमंत्री जी बेहतरीन प्रधानमंत्री सिद्ध हुए हैं क्योंकि उनकी दूरदर्शिता और आधुनिक प्रगतिवाद से देश को जो अभिसिंचित करने का जो उनका स्वभाव है कि हमारा देश सिंगापुर से भी ज्यादा चकाचौंध हों वो भी विकास की बिजली से, विकास के कारोबार से विकास से अनंत वैभवशाली आयामों से। प्रधानमंत्री जी हाल ही में गिफ्ट सिटी परिकल्पना से पूरी दुनिया को चौंका दिया। आइये! इस सम्बंध में विस्तार से बताते हैं -

गिफ्ट सिटी शब्द का मतलब है - इंटरनेशनल फाइनेंस टेक-सिटी (GIFT City) यह एक संयुक्त उद्यम कंपनी के माध्यम से गुजरात का एक व्यापारिक जिला है। उघ्इऊ सिटी भारत का पहला परिचालन, स्मार्ट सिटी और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र है। GIFT एक ऑपरेशनल स्मार्ट सिटी है जिसे

ग्रीनफील्ड डेवलपमेंट परियोजना के तहत गांधीनगर महानगरीय क्षेत्र में विकसित किया गया है।परियोजना में एक जिला शीतलन प्रणाली, भूमिगत उपयोगिता सुरंग और स्वचालित वैक्यम अपशिष्ट संग्रह सी विशेषताएं शामिल हैं। शहर को चलने योग्य बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है और इसमें वाणिज्यिक और आवासीय परिसर शामिल हैं।यह परियोजना साबरमती नदी के तट पर स्थित है। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसी में देश के पहले इंटरनेशनल बुलियन एक्सचेंज (India International Bullion Exchange) की शुरुआत भी की है। बता दें कि यह GIFT-IFSC में भारत का पहला इंटरनेशनल बुलियन एक्सचेंज होगा। इस एक्सचेंज को भारत में सोने के आयात का बड़ा एंट्री गेट माना जा रहा है। कहा जा रहा है कि अब देश में जो भी सोना आएगा वो इसी एक्सचेंज के जरिए आएगा। यह भी कहा जा रहा है कि यहां पर तय कीमतें सोने का भाव तय करेंगी जो अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार होगा। छ्रैं की ग्रोथ केवल गिफ्ट सिटी तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह देशभर के सभी ज्वैलरी मैन्युफैक्चरिंग हब्स तक होगी। योग्य ज्वैलर्स को आईआईबीएक्स से सोना आयात करने की अनुमति मिलेगी। छ्रैं मेंबर के क्लाइंट ज्वैलर्स को यह सुविधा होगी। एक्सचेंज पर ज्वैलर्स उपलब्ध स्टॉक देख सकते हैं और ऑर्डर भेज सकते हैं। इससे ज्वैलर्स का इन्वेंट्री मैनेजमेंट काफी सरल हो जाएगा। इससे कीमत और ऑर्डर सिक्वेंसिंग में काफी अधिक पारदर्शिता आएग। पीएम ने इस मौके पर गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक सिटी (GIFT) में NSE IFSC-SGX Connect को भी लॉन्च करेंगे। SGX Nifty फ्यूचर्स की गिफ्ट सिटी में हर कारोबारी दिन लगभग 19 घंटे ट्रेडिंग की जा सकेगी।नेशनल स्टॉक एक्सचेंज और एसजीएक्स ने एनएसई इंटरनेशनल फाइनेंशियल सर्विस सेंटर (IFSC)SGX कनेक्स नाम से एक स्पेशल परपज व्हीकल बनाया है। इससे GIFT-IFSC में फाइनेंशियल इकोसिस्टम को सुधारने में मदद मिलेगी। पीएम मोदी यहां डॉलर आधारित निफ्ट फ्यूचर्स को लॉन्च करने वाले हैं।बता दें कि मोदी जी ने इसी दौरान इंटरनेशनल फाइनेंशियल सर्विस सेंटर अथॉरिटी यानी आईएफएससीए (IFSCA) के मुख्यालय भवन की आधारशिला भी रखी है।

पीएम मोदी ने कहा कि इससे 130 करोड़ देशवासियों के सामर्थ्य को आधुनिक वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ने में और मदद मिलेगी। और आज भारत के बढ़ते आर्थिक सामर्थ्य, भारत के बढ़ते तकनीकी सामर्थ्य और भारत पर विश्व के बढ़ते भरोसे के लिए ये दिन बहुत महत्वपूर्ण है, ऐसे समय में जब भारत अपनी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, आधुनिक होते भारत के नए संस्थान और नई व्यवस्थाएं, भारत का गौरव बढ़ा रही हैं।

इस बुलियन एक्सचेंज को भारत में सोने के आयात का बड़ा एंट्री गेट माना जा रहा है। बताया जा रहा है कि अब देश में जो भी सोना आएगा वो इसी एक्सचेंज के जरिए आएगा।

गौरतलब है कि गिफ्ट सिटी गुजरात में पूरी प्लानिंग के साथ तैयार किया गया ऐसा डिस्ट्रिक्ट है, जहां पर कई फाइनेंशियल और टेक्नोलॉजी से जुड़े बिजनेस सेंटर हैं। सरकार ने गिफ्ट सिटी को सिंगापुर, दुबई और हांगकांग जैसे इंटरनेशनल फाइनेंशियल हब के मुकाबले खड़ा करने की योजना बनाई है।

इस साल की शुरुआत में, आईटी दिग्गज टीसीएस के नेतृत्व वाली टीसीएस बीएएनसीएस को एसजीएक्स द्वारा एनएसई आईएफएससी-एसजीएक्स कनेक्ट को बेहतर बनाने के लिए चुना गया था।ताकि बिजनेस, क्लियरिंग, सेटलमेंट और रिस्क मैनेजमेंट ऑपरेशंस के लिए एंड-टू-एंड सॉल्यूशंस के रूप में काम किया जा सके। 16 मार्च को टीसीएस के बयान के अनुसार, गिफ्ट कनेक्ट एसजीएक्स मेंबर्स को फिक्स एपीआई का उपयोग करके या टीसीएस बीएएनसीएस डीलिंग टर्मिनल के माध्यम से एनएसई आईएफएससी पर ऑर्डर देने की अनुमति देगा।सॉल्यूशंस और

सेटलमेंट मॉड्यूल और लिमिट मैनेजमेंट के लिए एनएसई आईएफएससी और एसजीएक्स की क्लियरिंग ब्रांचेस के साथ बातचीत करेगा, जबकि सभी रेगुलेटरी कंप्लायंस के कामों को भी करेगा। वहीं, देश में सोने फाइनेंशियलाइजेशन के अलावा टीसीएस के रिस्क मैनेजमेंट मॉड्यूल का उपयोग करते हुए, SGX और SGX ब्रोकर्स रिस्क रूल्स और प्रोफाइल को डिफाइन, ट्रेडिंग की निगरानी और नियंत्रण कर सकते हैं।

पीएम मोदी ने बताया कि नए भारत के नए संस्थानों से, नई व्यवस्थाओं से मेरी बहुत सी अपेक्षाएं भी हैं ।आज 21वीं सदी में finance और टेक्नालजी एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। और बात जब टेक्नालजी की हो, बात साइन्स और सॉफ्टवेयर की हो, तो भारत के पास ा भी है, और experience भी है। उन्होंने कहा कि Deepe Real time Digital Payments में पूरी दुनिया में 40 इ हिस्सेदारी अकेले भारत की है। आज हम इसमें लीडर हैं। Fintech के क्षेत्र में भारत की ये ताकत पूरी दुनिया को आकर्षित कर रही है. इसलिए, मेरी आप सबसे अपेक्षा है कि इग्हाम्प में आप नए नए innovations के लिए टार्गेट करें। GIFT IFSC fintech की ग्लोबल लैबोरेटरी बनकर उभरे।

पीएम मोदी ने उम्मीद जताते हुए कहा कि मैं चाहता हूँ कि उघ्हऊ घ्हएण, Sustainable और Climate Projects के लिए Global debt और Equity Capital का एक Gateway बने. इसी तरह, भारत को Aircraft Leasing, Ship Financing, CaRon Trading, Digital Currency, और IP Rights से Investment Management तक कई Financial Innovations की जरूरत है। पीएम मोदी ने कहा कि IFSCA को इस दिशा में काम करना चाहिए. IFSCA को Regulation और Operation Cost को भी न केवल भारत बल्कि दुबई सिंगापुर जैसे देशों की तुलना में भी Competitive बनाना चाहिए। आपका लक्ष्य होना चाहिए कि, IFSCA Regulations में लीडर बने, Rule of law के लिए High Standards सेट करे, और दुनिया के लिए पसंदीदा ARitration Center बन करके उभरे।

क्या है Bullion Exchange

साल 1990 के दशक में नोमिनेटेड बैंकों और एजेंसियों के माध्यम से सोने के आयात का उदारीकरण हुआ करता था। उसके बाद पहली बार भारत में योग्य ज्वैलर्स को आईआईबीएक्स (घ्ष्ँ) के माध्यम से सीधे सोना आयात कर सकेगें। इसके लिए ज्वैलर्स को एक मौजूदा ट्रेडिंग मेंबर का ट्रेडिंग पार्टनर या क्लाइंट होना जरूरी है।यानि डायरेक्ट।

IIBX का उद्देश्य

आईएफएससी की तरफ से जारी बयान के अनुसार, यह एक्सचेंज भारत में सोने के वित्तीयकरण को बढ़ावा देने के अलावा, जवाबदेह सोर्सिंग और क्ववालिटी के भरोसे के साथ कुशल प्राइस डिस्कवरी की सुविधा भी प्रदान करेगा।

यह भारत को वैश्विक सर्राफा बाजार में अपना सही स्थान हासिल करने के लिए भी सशक्त बनाएगा।

IIBX अखंडता और गुणवत्ता के साथ वैश्विक मूल्य श्रृंखला के उद्देश्य को पूरा करेगा।

IIBX के लॉन्च के साथ, भारत एक प्रमुख उपभोक्ता के रूप में अंतर्राष्ट्रीय सर्राफा कीमतों को प्रभावित करने में सक्षम होगा

IIBX में तीन वॉल्ट होंगेः

एक को सीक्वल (Sequel) द्वारा संचालित किया जाएगा। यह तैयार हो चुका है और इसे मंजूरी दे दी गई है।

दूसरा ब्रिंक्स (Brinks) द्वारा संचालित किया जाएगा। यह तैयार हो चुका है लेकिन अंतिम मंजूरी का इंतजार है तीसरा अभी निर्माणाधीन है।

NSE IFSC-SGX Connect भी लॉन्च किया गया है । इसके तहत, निफ्टी डेरिवेटिव्स के सभी ऑर्डर, जो सिंगापुर एक्सचेंज लिमिटेड (SGX) के सदस्यों द्वारा किए गए हैं, को 'ऑर्डर मैचिंग और ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म' पर डायवर्ट और मिलान किया जाएगा। यह GIFT-IFSC में डेरिवेटिव बाजारों में तरलता को गहरा करने में मदद करेगा। इस प्रकार, यह अधिक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिभागियों को आकर्षित करेगा और गिफ्ट-आईएफएससी में वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र पर सकारात्मक प्रभाव पैदा करेगा।इससे देश आर्थिक तौर पर मजबूत होगा और प्रत्येक भारतीय की विकसित भारत बनने की परिकल्पना में सहायक सिद्ध होगा।

चेस ओलंपियाड से पाक खफ़ा

मनोज उपाध्याय
खेल सम्पादक

मित्रों! भारत को विश्वगुरू यूंही नहीं कहा जाता। भारत के महान विद्वानों ने अनेक खोज की जिनको पूरा विश्व आज भी सैल्यूट करता है। उसी में एक है शतरंज।भारत में कई चीजों का अविष्कार भी हुआ है जो आज विदेशों में भी खूब लोकप्रिय हैं। इसको लेकर कई अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में खेले जाते हैं। इन्हीं में से एक है चेस ओलंपियाड। चेस ओलंपियाड 2 वर्षों में एक बार खेला जाता है। इसमें दुनिया के कई देशों के खिलाड़ी भाग लेते हैं। पहले ओलंपियाड को अनौपचारिक रूप से खेला गया था। कई बार चेस को ओलंपिक में भी शामिल कराने की कोशिश की गयी। लेकिन यह असफल हुआ। इसका इतिहास कुछ यूं है कि सन् 1924 के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक पेरिस में हो रहा था और इसी दौरान अनौपचारिक रूप से चेस ओलंपियाड पेरिस में खेला गया। इसी समय 30 जुलाई 1924 को FIDE का भी गठन हुआ। अधिकारिक तौर पर FIDE की ओर से पहला चेस ओलंपियाड 1927 में आयोजित किया गया था। यह आयोजन लंदन में हुआ था। 1950 के बाद से नियमित 2 वर्षों के अंतराल के बाद इसका आयोजन होता है। कोरोना महामारी की वजह से 2020 और 2021 का चेस ओलंपियाड वर्चुअल रूप से आयोजित किया गया था। लेकिन 2022 में इसका

आयोजन भारत के चेन्नई में हो रहा है। इस बार का चेस ओलंपियाड 28 जुलाई से लेकर 10 अगस्त तक चला। भारत के लिए गर्व की बात यह है कि जो खेल यहीं से शुरू हुआ था, पहली बार उसे इसका मेजबानी करने का मौका मिल रहा है। एशिया को 30 साल के अंतराल के बाद इस आयोजन की मेजबानी मिली है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसी जुलाई में चेस ओलंपियाड का आगाज भी करेंगे। भारत ने पहली बार 1956 में मास्को में हुए चेस ओलंपियाड में हिस्सा लिया था। उस समय भारत 27 वां स्थान पर रहा था। 2020 में चेस ओलंपियाड में भारत रूस के साथ संयुक्त विजेता रहा था। उसे स्वर्ण पदक हासिल हुआ था। इससे पहले भारत ने 2021 और 2014 में दो कांस्य पदक जीत चुका है। इस बार के चेस ओलंपियाड में 188 देशों के 2000 से अधिक प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। खुद भारत के 30 खिलाड़ी इस ओलंपियाड में शामिल होंगे। अब तक के इतिहास को देखें तो यह शतरंज ओलंपियाड में अब तक की सबसे बड़ी भागीदारी होगी। भारत में भी इसे खास बनाया जा रहा। जून में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से एक मशाल रिले को निकाला गया था। यह भारत के 75 शहरों से गुजरा है। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि हमें गर्व है कि शतरंज का खेल अपने जन्म स्थान से निकलकर पूरी दुनिया में छाप छोड़ रहा है। बता दें कि भले ही भारत आज चेस ओलंपियाड का आयोजन करके खुद पर गौरवान्वित हो रहा है। लेकिन पाकिस्तान को यह सब चीजें बर्दाश्त नहीं हो रही। पाकिस्तान ने तुरंत 44वें ओलंपियाड से हटने का फैसला लिया है। बताया जा रहा है कि कश्मीर से रिले मशाल के गुजरने से वह नाराज है। पाकिस्तान ने आरोप लगया है कि भारत इस आयोजन का 'राजनीतिकरण' कर रहा है। पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय ने अपने बयान में कहा कि अफसोस की बात है कि भारत ने इस प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय खेल का राजनीतिकरण करने के लिए जम्मू और कश्मीर में रिले मशाल को लेकर गए। उन्होंने यह भी कहा कि पाकिस्तान को शतरंज ओलंपियाड में भाग लेने के लिए अंतर्राष्ट्रीय शतरंज महासंघ (FIDE) द्वारा आमंत्रित किया गया था। इस आयोजन के लिए एक पाकिस्तानी दल पहले से ही प्रशिक्षण ले रहा था। 21 जुलाई को मशाल रिले जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर से निकला था। यही पाकिस्तानी अंहकारी और कट्टर सोच ही है कि वहां के बच्चों को आगें बढ़ने से विश्व पटल पर छाने से रोकती है। पाकिस्तान अपनी कट्टरता और आतंकवादी सोच के कारण ही पूरे दुनिया में हेय दृष्टि से देखा जाने लगा है और यह बात पाकिस्तानी भी महसूस करते हैं, वहीं बलूचिस्तानी तो खुल कर स्वीकारते भी हैं।फिलहाल भारत में आयोजकों ने दावा किया कि 1414 खिलाड़ियों के साथ परीक्षण प्रतियोगिता का आयोजन करके नोबल बुक आफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में शामिल होने का प्रयास किया गया।शतरंज ओलंपियाड का आयोजन पहली बार भारत में हो रहा है जो यहां के समीप मामल्लापुरम में खेला जाएगा। ओलंपियाड में 180 से अधिक देशों के खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। भारत ओपन और महिला दोनों वर्ग में अपनी तीन-तीन टीम उतारेगा।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी यहां नेहरू इंडोर स्टेडियम में 28 जुलाई को तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन की मौजूदगी में प्रतियोगिता का उद्घाटन करेंगे। मुकाबले 29 जुलाई से खेले गए जो 10 अगस्त तक चला। ओलंपियाड को सफल बनाने के लिए तमिलनाडु सरकार कोई कसर नहीं छोड़ा।

■■

मालपुए रेसपी

सावन में भगवान शिव जी को चढ़ाई जाने वाली पसंदीदा मिठाई है मालपुए जोकि उड़ीसा में भगवान जगन्नाथ जी को भी चढ़ाई जाती है। आइये! जानते हैं इसे बनाने की विधि -

महत्वपूर्ण सामग्री -

मालपुआ की सामग्रीमालपुआ का मिश्रण बनाने के लिए

1 कप मैदा

1 कप खोया, कद्दूकस1/2-1 कप पानीमालपुआ बनाने के लिए

10 टुकड़े पिस्ता, बारीक कटा हुआ8 टुकड़े बादाम, रबड़ी

बारीक कटा हुआ एक चुटकी केसर

6 टेबल स्पून घी,

बड़ा4 कप चाशनी

चासनी -

1 कप चीनी

1 कप पानी

1/2 टी स्पून इलायची पाउडर

केसर के कुछ धागे

सबसे पहले एक चौड़ा पैन में 1 कप चीनी लें।

इसके अलावा, इसमें आधा कप पानी डालें और उबाल लें।

चीनी की सीरप को पूरी तरह से घोलें।

अब इलायची पाउडर और केसर के धागे डालें।

और अब 10 मिनट तक उबालें जब तक कि चीनी की चाशनी चिपचिपी न हो जाए।कवर करें और अलग रखें।

मालपुआ रेसिपीः

सबसे पहले, एक बड़े मिश्रण कटोरे में 1 कप मैदा, कप रवा और कप चीनी लें।

इलायची पाउडर भी मिलाएं।

पूरा बैटर (मिश्रण) दूध से मिलायें।

अच्छी तरह से मिलाएं सुनिश्चित करें कि बैटर में कोई गांठ नहीं हैं।

आवश्यकतानुसार पानी डालें और अच्छी तरह मिलाएँ।

सुनिश्चित करें कि बैटर चिकनाई युक्त डालने की स्थिरता का है।

आगे कम से कम 5 मिनट के लिए बैटर को फेंट लें। ताकि बैटर हल्का और रोएँदार हो जाए।

30 मिनट के लिए बैटर को ढक कर रख दें।

बैटर को फिर से मिलाएं और एक कलछी भर बैटर लें।

गर्म तेल / घी में बैटर को डालें। आप अधिक स्वस्थ विकल्प के लिए पैन फ्राई भी कर सकते हैं।

एक बार जब मालपुआ तैरने लगे तो मालपुआ के ऊपर तेल छिड़क दें।

और छिद्रित चम्मच की मदद से धीरे से दबाएं।

मालपुआ पूरी की तरह फुल जाता है।

अब मध्यम आंच पर दोनों तरफ से सुनहरा भूरा होने तक तलें। आप वैकल्पिक रूप से केवल तब तक भून सकते हैं जब तक वे दोनों तरफ हल्के भूरे रंग के न हो जाएं।

अतिरिक्त तेल को हटाने के लिए एक रसोई तौलिया पर मालपुआ को छान लें। वैकल्पिक रूप से, एक और स्पैटुला की मदद से, अतिरिक्त घी / तेल को दबाएं और निचोड़ें।

अब मालपुओं को गर्म चीनी की सिरप में भिगो दें।

10 मिनट के लिए आराम दें और सुनिश्चित करें कि मालपुआ के दोनों किनारे अच्छी तरह से भिगोए गए हैं।

अंत में, मालपुआ को रबड़ी के साथ गर्मागर्म परोसें और आपके पसंदीदा नट्स के साथ गार्निश करें।

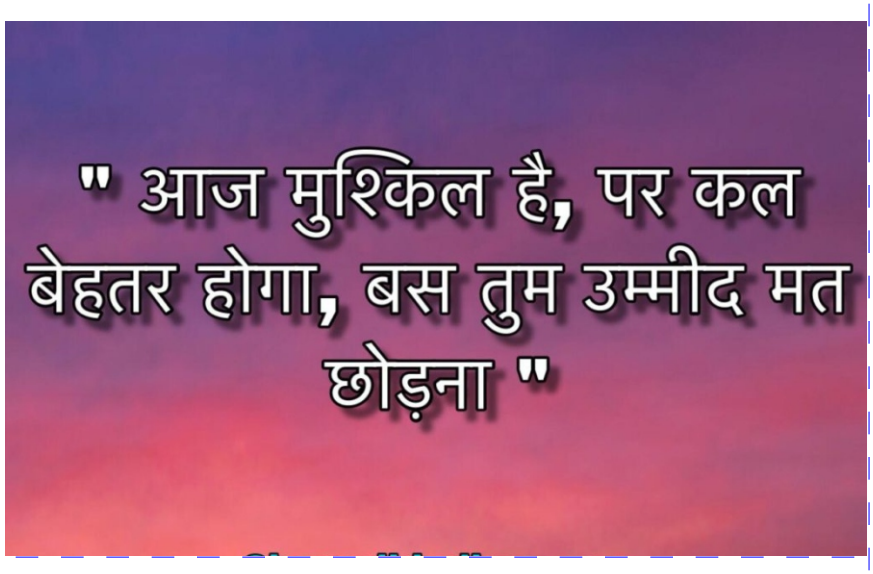

हिन्दू संस्कृति से ओतप्रोत फिल्म 'कार्तिकेय'

भारतीय युवाओं का मानना है वॉलीवुड की फिल्में और बेवसीरीज में सिवाय अश्लीलता के कुछ नहीं है। हम इन्हें परिवार के साथ भी नहीं देख सकते । कहीं न कहीं बॉलीवुड की फिल्में चोरी, ड्रग्स, मार-काट, व हिन्दू देवी-देवताओं का अपमान करतीं हुईं दिखाई जातीं हैं जिससे देश की प्राचीन संस्कृति का अपमान होता है। आमिर की लाल सिंह चड्ढा का भी सोसलमीडिया पर जबर्दस्त विरोध हो रहा है।

ऐसे में दक्षिण भारत की कार्तिकेय- 2 फिल्म, 13 अगस्त को रिलीज़ हो रही है जिसमें निखिल सिद्धार्थ, अनुपमा परमेश्वरन और अनुपम खेर जैसे दिग्गज कलाकार है। फिल्म को चंदू मोंडेति ने बनाया है। यह फिल्म पूर्णतः हिन्दू धर्म पर केंद्रित है। जिसमें डॉ कार्तिकेय नाम का एक लड़का द्वारका नगरी के और उनके रहस्यों के बारे में जानने का प्रयास करता है। फिल्म में मंदिर और भगवान कृष्ण का कई जगह पर जिक्र है। हिन्दू संस्कृति व धर्म का जिक्र है। फिल्म के संगीत में भी बांसुरी की ध्वनि सुनाई पड़ती है। जिसे भगवान कृष्ण बजाते थे। इस फिल्म को प्रमोशन करने के लिए भी फिल्म की पूरी टीम सबसे पहले इस्कॉन वृन्दावन गई, वहां प्रसाद ग्रहण किया, इस्कॉन के प्रभु जी से मिली और भगवान कृष्ण के सामने फिल्म के टीज़र को दिखाया।फिल्म को इस्कॉन के प्रभु (घ्म्व्दह' ईंप्ल रग) जी व भक्तों ने बहुत पसंद किया। उन्होंने फिल्म को सहयोग देने की बात भी कही है। इसके

अलावा फिल्म को देखने का भी मन बनाया है। पूरी टीम ने जहां मंदिर जाकर फिल्म के टीज़र को दिखाया वहीं उन्होंने यह भी बताया कि, इस फिल्म के हीरों वो नहीं हैं जो इसमें काम कर रहे हैं,बल्कि स्वयं भगवान कृष्ण हैं। इससे पहले भी फिल्म के कलाकार और निर्माता ने बताया था कि इस फिल्म में उनका कोई हाथ नहीं है बल्कि सब कृष्ण की कृपा के कारण है।इस्कॉन वृन्दावन के प्रभु जी ने फिल्म पसंद किया और उन्होंने यह भी बताया की इस फिल्म के प्रदर्शन के लिए फिल्म की टीम को मंदिर भी आना चाहिए। इससे मेकर्स को लगता है कि भगवान कृष्ण का फिल्म पर आशीर्वाद है। इस फिल्म के कलाकार निखिल सिद्धार्थ कहते हैं, 'भगवान कृष्ण सभी जगह हैं इसलिए वो इस फिल्म को मलयालम, कन्नड़ा, हिंदी व अन्य भाषा में रिलीज़ कर रहे हैं।'

■■

श्री नरेन्द्र मोदी जी
प्रधानमंत्री

श्री योगी आदित्यनाथ जी
मुख्यमंत्री

श्री अरविंद कुमार शर्मा
नगर विकास मंत्री

डॉ महेंद्र नाथ पांडेय
सांसद चंदौली व भारी उद्योग
मंत्री भारत सरकार

सुशील सिंह
विधायक
सैयदराजा विधान सभा

कार्यालय नगर पंचायत सैयदराजा, चन्दौली।

आजादी का अमृत महोत्सव

स्वतंन्त्रता दिवस की 75वीं वर्षगाठ के पूर्ण होने के शुभ अवसर पर नगर पंचायत की तरफ से समस्त नागरिकों को हार्दिक शुभकामनायें।

नगर पंचायत सैयदराजा जनता से निम्न अपेक्षायें करती है -

1. **स्वच्छता का करं पालन, स्वच्छ हो हर घर आंगन।**
   कूड़ा करकट कूड़ेदान में ही फेंके तथा सफाई में नगर पंचायत का सहयोग करें।
2. **स्वच्छता का प्रण करें, सैयदराजा को हम स्वच्छ रखें।**
   नगर पाचयत के करों का भुगतान समय से करें।
3. **आसपास स्वच्छता रहेगी, कई प्रकार की बिमारिया घटेंगी।**
   सार्वजनिक स्थानों अथवा नगर पंचायत की भूमि पर अतिक्रमण न करें।
4. **प्रदूषण से बच्ने के उपाय, स्वच्छता ही है जो कामें आयें।**
   जन्म-मृत्यु का पंचीजन समय से कार्यालय में दर्ज करायें।
5. **स्वच्छता अपनाओ-स्वच्छता अपनाओं, अपने घर एवं नगर को सुन्दर बनाओं।**
   जल ही जीवन है जल का दुरूपयोग न करे।
6. **तभी आयेगा नया सवेरा, जब होगा साफ-सुथरा नगर हमारा।**
   खुले में शौच न करें और नहीं किसी को करने दें।

(विरेन्द्र जायसवाल)
अध्यक्ष
नगर पंचायत सैयदराजा
चन्दौली

समस्त सम्मानित सभासद गण

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने पर शुभकामनायें

आज़ादी का अमृत महोत्सव

रमा शंकर सिंह

अधिवक्ता, उच्च न्यायालय, लखनऊ

एवम्

सेवानिवृत्त वित्त अधिकारी,

बी. बी. ए. यू. (केन्द्रीय विद्यालय) लखनऊ

Mob. : 9453296764, Email : advocateramashankarsingh@gmail.com, rbulletfire2016@gmail.com

RNI: UPHIN/2017/75716

SACH KI DASTAK

(A MONTHLY HINDI JOURNAL)
C-6/2-M, NEAR CHETGANJ THANA,CHETGANJ, VARANASI
Website : www.sachkidastak.com, E-mail : sachkidastak@gmail.com
Mob. : 8299678756, 9598056904

AUGUST, 2022
PRICE : RS. 20/-

EDITOR : BRAJESH KUMAR

NEWS EDITOR : AKANSHA SAXENA

75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

दीपक कुमार आर्य

(पौत्र- स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय केदारनाथ आर्य वैद्य)

क्षेत्रीय मंत्री, (काशी क्षेत्र)

भाजपा (पिछड़ा मोर्चा)

जनपदीय चेयरमैन व प्रभार पं0 बंगाल

विशाल भारत संस्थान जनपद चन्दौली

पं0 दीनदयाल नगर, जिला : चन्दौली

भारतीय जनता पार्टी